

ST. JOSEPH'S COLLEGE, N. DINI TAL — CONDUCTED BY THE CHRISTIAN BROTHERS



College Review

1972

CONTENTS

	Page
Dedication	5
Classes 1972	6
Class Monitors	22
Sisters of St. Anne & Hindi Department	23
Science Department	24
Office Staff	24
First Holy Communion and Confirmation	27
Sports—1972	31
The Tenth Annual Aquatic Meet	37
The Boat Race	41
St. Joseph's Scout Rally—1972	43
Tennis	48
Independence Day Cup Final—1972	50
Table Tennis at St. Joseph's	54
Boxing	59
Our Billiards Club	62
Badminton	63
Indoor Games Room	64
On the Spot Painting Competition	65
Munich My Dream	66
The Tree Planting Ceremony	69
The Moon Rock comes to Sen	72
A Nightmare Journey	73
Sen During 1972	77
History of St. Joseph's	83
Past Pupils 1972	96
Letters to the Editors	102
In Memoriam	103
एड एडिटोरियल	104
एडिटोरियल की ओर	107
एडिटोरियल सेना	108
एडिट	110
A Message	111
Prize Winners 1972	111
Our Donors 1972	117

Class VI A



(See R)

1st Row: R. Chaudhan, R. Pandey, Mr. G. Keeler, R. Shah, A. Ghoshal.

2nd Row: S. Pal Singh, A. Singh, M. Mondal, L. Khan, A. Wilson, D. Mohan, R. Narula, P. Gupta, A. Kishor, T. Shrivastava, S. Sharma.

3rd Row: M. Agarwal, M. Chaudhary, R. Singh, S. Prasad, P. Gupta, S. Sahni, A. Bhattacharya, V. Joshi, S. Kalia.

4th Row: S. Singh, K. Chandra, M. Anand, A. Malik, A. Bhatia, P. Nalapatra, H. Gupta, R. Singh, R. Ghoshal, P. Gupta.

Absent: Madanji Singh.

In Memoriam

Another link with the past was broken by the death of Mr. Jai Singh Bora who passed away peacefully to his maker on Nov. 22nd. Jai was a well known figure in St. Joseph's, not only during his years when he worked under thirteen Principals and Six Provincial Superiors, but also when he was retired and was a personal Assistant to the Principal for the last five years. He gave a total of fifty-two years of loyal service to St. Joseph's. His kindly ways and pleasant smile will long be remembered not only by the Staff who knew him intimately, but also by the boys and parents who called to St. Joseph's. During part of this year he stayed in Almora with his son, but in the middle of November, he came in to Naini Tal to have, as he said, a last look at where he had worked so loyally. Even during the three days he was here, he kept asking how the school was doing. He remembered with love Brs. Culhane, Connolly & Ryan. It seemed that he had a premonition of his approaching death because one of the last words he said to me, was, that he would never again be able to climb up to the College. He left Naini Tal for Almora on the 19th and passed away peacefully on the 22nd to receive his reward for a life of devotion, loyalty and service from his Creator. The Editor, Staff and students of St. Joseph's offer their sincerest condolences to his wife and family.



एक मनोरंजक यात्रा

विशाले वर्षे दशहरे के अवसरों में ही अपने माता-पिता के साथ गुजरात का भ्रमण करते आते थे।

पहले विश्व में हम बंगाली से जायस होते। अब हमने ताक-महाल, फोहू-मसीकरी, जायस के किताब और कुछ अन्य पत्रों को और भी। मुसिमा के निहालकर के जकास के जाक-महाल पर भीपरी, लड़िनीय प्रतीत हो रहा था।

असम के दिन भी चट्टी हो हूय सोम अपनी कार द्वारा जमपुर के निचे रखावा हो गये । तीस बीस की पाया के पश्चात् हमने राउतबाग के अरलपुर नामक नगर में उदेष किया । अरलपुर के विष-विष सब के सुन्दर पक्षियों का बहुत देखावर हम अपने गये ।

मान में एक हुए और वहाँ हमें के कारण हुए जहाँ हमने-हमने दोहर के दो बड़े राजधानी की राजधानी जगह पर पहुँचे । मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि मुझे अपने में लाकर खड़ा कर दिया गया हो । जलन सामान्य धर्मिक विधायन यह है जो दोहर हमने एक नम-प्रवर्तन की अपने नाम दिया और अपने विचार में ।

मन्त्रों परकी हस्त के बहुतों का जल-बहुल प्रेक्षा । उर मनुष्य की रमणीयता बहुल ही । एक विद्यालय जलामय के माय के विद्वत् बहु भवन सर्व सुन्दर प्रतीय हो रहा था । इनके परमात्मा हम उरद्वार के सुशोभित सामग्री मिले ही जोर बढ़े । पर्वतीय क्षेत्र में एक छोटी-सी पहाड़ी के विस्तार पर बना हुआ वह विद्यालय की प्रतीक्षा ही है । ऊपर की सीढ़ी ही छोड़ कर कुछ दूर प्रवेश करने के बाद हम आगे के विद्यालय द्वार पर पहुँचें ।

इस में प्रवेश करने की सेवा तथा यह कि हम आधुनिक युग में री-वीन प्रतर्पण की ओर बढ़ रहे हैं। राजपूत महाराजाओं के इस विचार-धारा को देखकर वे वास्तविकतया गहरे में आगोश में झुकी और मोड़ी सीढ़ी की ओर बढ़ने का मन बनाया। उन्होंने इससे पहले ही इसी सीढ़ी की ओर बढ़ने का मन बनाया था। उन्होंने इसी सीढ़ी की ओर बढ़ने का मन बनाया था। उन्होंने इसी सीढ़ी की ओर बढ़ने का मन बनाया था।

अनेक पक्ष-वर्षों के आरुढ़ पर, सर्व-श्रम हमने कानों-देवी के समिर के पाले किये । यह समिर हम क्षेत्र में बहुत वसिष्ठ है और कहीं बराबर हमने एवं कवियों का साक्षात् रचना है । उन पुरानी इमारतों की देखकर जेने कहीं के सम्मुख, शक्तिशाली इतिहास के लोभित ज्यों के रूप गद्य बने । कहीं की महाराजियों का पक्ष आज की 'श्रीमद्भूत' के नाम के विग्रहण है । इसे 'श्रीमद्भूत' हम किये कहा जाता है क्योंकि कवनों सब और कोटि-कोटि श्रम जो हुए हैं और केवल एक ही शीतल की ली ने यह विशाल कला प्रकाश में उपस्था रहता है । किये में और भी कई स्थानों की किये के हमें उपस्था की बड़ी कले । फिर जोर उपस्था कवनों हम क्षेत्र 'रक्षा-पक्ष' देखने बने ।

नगर के मध्य में स्थित लाल-क़स्ब का बना हुआ यह मक़बरा बहुत दुर्लभ है। सीढ़ियाँ नज़र आने लगती हैं। इस मक़बरी समूह में दो ही मक़बरा हैं। इसमें काशी की १५-१६ तक ज़माने के लाल क़स्बा के लोग हैं।

हवा-महल के 'जयपुर सिटी पैलेस' का हाल भी बहुत दुःखर जथा । वह सुप्रसिद्ध जयपुर वाले राजपूतों का कार्यालय था परन्तु आज राजस्थान सरकार ने इसमें प्राचीन राजपूती अन्ध-शक्तियों तथा अन्य वस्तुओं का संग्रह किया है ।

धीरे-धीरे गाँव होने लगी । अधिकतम दिना के भीरे-भीरे सुन अलग हो रहा था । जयपुर में कोई हुई नातिमा के नीचे देखा हुआ जयपुर उस समय सर्वोच्च था । हवा-महल के हम 'राजस्थान हवा-महा इन्वॉन्विजम' रहे । वहाँ पर राजस्थानी जनता के कला-कीर्तन का प्रति मुद्रा उपस्थित था । वहाँ से कुछ वस्तुएँ खरीद कर हम बाजार में घूमने लगे । जब रात्रि का अंधकार छा गया, तब हम विशाल-बृह पंडित लगे ।

अगले दिन प्रातः ही हमने जयपुर के लिए प्रस्थान किया । रास्ते में अजमेर के 'अन्धकार' नामक शरीर और दरवाह की देखकर हम अनेक बल मिले । जयपुर की सीमा की छाया के परावर हम विजोत्पन्न रहने । मेराह की इस एक-धुमि की छाया अगली और राजपूत मन्दाप पर पड़े है । जहाँ के सीधे द्वारा विजोत्पन्न का काम भारतीय इतिहास में अमर रहने ।

कुछ ही दूर पहाड़ी पर एक विशाल भिन्न भन्ना हुआ था । पञ्च-उत्पन्न काय देखकर हम सीधे मिले में घूमने लगे । सबसे पहले हमने विजय-सम्म' और 'सीति-सम्म' देखे जो आज से कोई तीन या चार सतासी पूर्व राजपूतों ने पर्वतों पर विजय पाये की स्मृति में बनाये थे । पारो और अनी हुई मुद्रा स्तुतिओं हमें उस पर्वत की कला का स्मरण करा रही थी । विजय सम्म के समीप ही यह स्थल भी देखा जहाँ पर कई और राजपूत महाराजों ने सोम-सुधार करने जोहुर रखा था । सीधे ही दूर महाराजी स्तुति की का विजय-सम्म का जो एक जय-मुद्रा के बीच में था । यह पर्व और सीधे अनी तक उस दिने में सुप्रसिद्ध है जिसमें मुगल सम्राट अकबरजीन सिक्की की पदमिनी का प्रतिभिन विजय का था । इसके पश्चात् हमने वहाँ कीरावाई का मन्दिर और कुछ अन्य स्थान देखे । अधिक समय न होने के कारण हम मिले के चलने लगे ।

जब तक हम सीधे पहुँचे, तब तक फिरकर पवित्र दिना में अलग हो चुका था और दिन का कलाप सीधे-सीधे पर्वत के अन्धकार में विजय होता था रहा था । रात्रि के भी-बने हमने विजोत्पन्न से जयपुर के लिये प्रस्थान किया । मेराह बने जब हमने जयपुर में प्रवेश किया, तब दूर पहाड़ विजय-सीधे में जयमल रहा था । यह हमने देखकर ऐसा सीधे हुआ जहाँ वहाँ कीरावाणी मनाई का रही हो । कुछ समय तक तो हम सीधे हवा-महा परावरी रहे, फिर जब विजय-बृह में पहुँचे तो सीधे ही सीधे करके लो लगे ।

अगले दिन, प्रभात की किरणें वन में फैल रही थीं कि मैं उठ गया । सीधे अनेकों के लिये अपनी सीधे हवा-महा सीधे, तो मेरी आँखें खुली की खुली रह गई । विजय में मेराह, जयपुर की सुप्रसिद्ध 'विजय सीधे' का हवा अन्धकार महोदर था । मैं मुगल किलर सीधे कर विजय पर कला गया । सामने ही दूर-दूर तक यह महोदर फैला हुआ था और उसके मध्य में एक जय महल अलग हुआ था मिले देखने कई स्तुति सीधे विजय सीधे आने लगे ।

एक अने में सीधे हो कर और कुछ सा-सीधे हम महाराज-सम्म समारक देखने लगे । यह समारक महल के एक सीधे पर अनी पहाड़ी के विजय पर बना हुआ है । वहाँ पर महाराज प्रभाव और उनके सीधे 'विजय' की विजय और सुप्रसिद्ध स्तुति अनी हुई है । उसके बाद हम 'महोदरों की

काशी' नामक स्थान पर पहुँचे । यह स्थान गोरखाल की राजियों के मनोरंजन के लिये बनवाया गया था । इस और रंग-बिरंगे गुरुत और लहलहात के कपड़े देखकर मेरा मन बहुत ही उठा ।

इसके पश्चात् हम उदयपुर का राज्य-महल देखने गये । इस प्रान्त में महाराजा प्रताप और उनके पुत्रों निवास करते थे और इसी कारण यह महल ऐतिहासिक जगहों में खेद माना जाता है । आज वहाँ पर उस काल के भिन्न-भिन्न वस्त्रों और कुछ अन्य वस्तुओं का संग्रह रखा जा सकता है । राज्य-महल देख कर, हम उदयपुर से तीस मील दूर 'जय-नामध' नामक शरीकर देखने गये । इस बीच का क्षेत्रफल बहुत ही बड़ा था, इतना कि सम्भारों में दूसरी ओर फैलन जल ही जल बनकर जा रहा था । दूर तक धूमि का बोरी नाम-निवाह तक था । चारों ओर निरन्तरता झाई हुई थी और उस प्रकार में बहुतकर मन की बहुत कामि मिली । वहाँ नीला-बिहार में भी बहुत आनन्द आता । सम्भा होने पर हम उदयपुर लौट आये ।

अगले दिन सुबोध से गहले ही हम अपनी सभी सामग्री वापस आरम्भ करती पड़ी । रातों में एकलिंग की, पाय द्वारा और कोकरीली के बुकिमाल मणिरों के वल्लो भरते हुए हम रात्रि के समय उदयपुर पहुँचे । रात को वहाँ विधाय करके हम अगले दिन जरेली लौट आये । इस प्रकार मेरी यह मनोरंजन यात्रा समाप्त हुई । इसने कम समय में मेरी सभी यात्रा के परचाय बचावट के शरीर पुर-पुर हो गया था फिर भी मैं इस यात्रा को कभी नहीं भुला सकता ।

अन्तर्गत भाग्य,

कला १०

राजगिरी की सैर

राजे की छुटियाँ अभी आरम्भ हुई थीं, कि मैं अचानक ही परदा, अपने भाग्य के पात, और अपने चला गया। यहाँ से हूँ सीधे राजगिरी की देखने के लिए गये। राजगिरी पांच पर्वतों के चिरी राधा विराट्टार के बचाने की बचती है।

सबसे पहले हम लोग 'साउथ हिल' नामक जगह देखने गये। यहाँ पर सात घुँघुँ हैं जिसमें से बराबर बारह वाली आवाज रहता है। पर्वतों के तुलने पर पता चलता कि यह पानी बराबर इसी तरह पानी घुँघुँ के समक-असक आवाज रहता है। आज तक कोई इसके विवरणों की जगह नहीं जान पाया है। यहाँ पर गहाने के कई शीशों के कारीगरिक रीत भी जम्मे हो गए हैं। और ! हम लोग यहाँ जगह तो नहीं देखिक मुँह-हाथ को कर जाने बल बिके।

हम लोग एक बड़े से तालर के जले हुए हाथ के झगने गये। 'साउथ' के बचाने पर पता चलता कि यहाँ पर राधा विराट्टार की पत्नी का जगह एक दीवार में बसा हुआ है, जिसे आज तक कोई नहीं विचार पाया है। इसके बाद एक बड़े से छेद की तरह आवाज करते हुए हमने बचाना कि अकेली ने जगमें जोग लगा कर इस दीवार को चढ़ाने की कोशिश की लेकिन वे असफल हो रहे। अब अगर सम्भव नहीं तो उदा बचती है, लेकिन विराट्टार के भग के अमे दमनी के देखने का ही केन्द्र रहने दिया है।

इसके बाद हम लोग जब जगह पहुँचे यहाँ सीधे कुछ बचन बार राजगिरी का कर रहे थे और जगह जगह जगह के बचाने के लिए वे दिया था। यहाँ से हम लोग उस जगह पहुँचे पर बहुत ही पुराना एक का बहिया बिला था, और उसके बिलाव अज भी बिलकुल पाक बिलबारी देते हैं। यह देखने के बाद हम लोगों ने जगपाव बिला और फिर दोनों पर्वतों की मोटियों पर जगह-जगह मगिरी को देखने के लिए निराल पड़े। उसकी देखने के लिए जगह बार-बार कर मोती सीधियाँ बसाई थीं। सीधियों की खान होती ही मोटा और जगह के बाद हम लोग मगिर में जा पहुँचे। जगह में मगिर को देखने के लिए उदा पर सीधे से जगह तक जाने वाली घुँघुँ लगे हैं। वे मोती वे चलते हैं। उस मगिर में जगहान कुछ की मुनि सोने की बनी है।

इसके बाद हम लोग यहाँ के जगहान को देखने गये। हमने यहाँ पर कई हुई मुलियाँ और जगह की मोती का बहुत जगह बसाई है। यहाँ पर वह एक का बहिया भी रखा हुआ है। राजगिरी का यह जगहान मोतीव देखने के बाद हम लोग परदा कारिक मोट जाने।

विदुष मौरम अहा
कला ६

ओलिंपिक खेल

आज के युग में खेल का बहुत महत्त्व है। इस वाक्यम द्वारा समझें आज के युग किसे किना अपनी-अपनी शक्ति का परिचय दे सकते हैं। ऐसी अभिवृत्ति युवा दुर कर वैश्वभाव और स्नेहभाव को जन्म देती है। इस बात को ध्यान में रखकर ही समुदाय ने खेलों की जगह बनाई। ओलिंपिक खेलों का महानयन और भव्यता खेल प्रतियोगिता है।

ओलिंपिक खेलों का आरम्भ प्राचीन यूनान में हुआ। वहाँ ओलिंपिया नगर के निकट दो खेल दूर चले वर्ष आयोजित किये जाते थे। हजारों खिलाड़ी देश-विदेश से अपने मातृभू, शीर्ष और संस्कारात्मिक का प्रदर्शन करते वहाँ पहुँचते। उस समय यूनान में लड़ाई-युद्ध चलता युद्ध बन्द कर दिये जाते। खेलों में भाग लेने वाली प्रतिस्पर्धी शीर्षों में शामिल-अभिषिक्त होती और उनमें परस्पर द्वेष-घोषणा की कलह करने का प्रदर्शन किया जाता। ओलिंपिक खेलों में विजय प्राप्त करने वाले खिलाड़ी को बहुत अधिक आदर और सम्मान दिया जाता था और उनके देश के सम्मान प्राप्त जाता था।

इससे है कि पहली ओलिंपिक प्रतिस्पर्धा में खेल को ही सब की शीर्ष, थी। बाद में कुश्ती, जलकला, बुलिफा, कबजा खेलना, घोड़ों की शीर्ष, रथों की शीर्ष आदि कुछ अन्य खेलों को भी शामिल किया गया। फिर एक समय वहाँ भी आधा वर्ष युद्ध की बात और भाग करने लगी। अन्तिम किंग्डी कारणों से इन खेलों की १८४ ई० से स्थगित कर दिया गया। इस प्रकार के द्वेष वर्य बीत गये। सन् १८९६ में फ्रांस में और सन् १९०० में अमेरी में इन खेलों की पुनः आरम्भ करने के प्रयत्न किये गये, परन्तु वे असफल रहे।

सन् १८९४ में फ्रांस के बैरन पियरे डि कोबर्टेन ने इन खेलों की फिर से शुरु करने का संकल्प लिया। उसी वर्ष २३ दूध को पेरिस में आन्तराष्ट्रीय एथलेटिक फेडरेशन की बैठक हुई। कोबर्टेन ने दूध तथा में ओलिंपिक खेलों की फिर से आरम्भ करने का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव का सभी ने खुशी-खुशी से स्वीकार किया। ओलिंपिक खेलों का संस्कार और नियंत्रण करने के लिए आन्तराष्ट्रीय ओलिंपिक समिति बनाई गयी।

कोबर्टेन की 'आधुनिक ओलिंपिक खेलों का संस्कार' कहा जाता है। उनकी के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप सन् १८९६ में यूनान की राजधानी अथेंस में पहली आधुनिक ओलिंपिक प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इस अवसरों में कुल दैर्घ्य खेलों के भाग लिया। इन खेलों में मेराथन की शीर्ष, रथों की शीर्ष, कुश्तीकाशी, कुश्ती, जवानवर्गों की लड़ाई आदि अनेक प्रतिस्पर्धाएं शामिल की गयीं।

उस समय कुश्ती और भारोत्तोलन में भाग की समूह बैठक बैठ, इसी बैठक अवस्था लाइट बैठ आदि प्रतीकरण नहीं होते थे। कोबर्टेन सबसे अधिक समय देता होता नहीं सबसे बड़ा भारोत्तोलन होता और की कुश्ती में सबसे प्रसिद्ध होता नहीं सबसे बड़ा प्रह्ववान कहलाता। इस प्रकार आज तक दूर

बार बार बार अलग-अलग स्थानों पर औद्योगिक क्षेत्रों का आविर्भाव किया जाता रहा है। इनमें-दार्जिली, फुटबांग आदि अनेक क्षेत्र भी शामिलित कर दिये गये हैं।

इन क्षेत्रों के आविर्भाव का भार किसी राष्ट्र पर नहीं बलित किसी एक नगर पर होता है। नैसर्गिक शिवाही किसी इतिवृत्तिता में प्राप्त नहीं हो सकते। क्षेत्र आरम्भ होने से पहले चुनाव के औद्योगिक नगर में एक मजाल जलवायी जाती है और बीदाओं द्वारा उस जगह पहुँचाई जाती है जहाँ क्षेत्र होने वाले हों। इनके द्वारा वहीं मुख्य स्ट्रेडिगम में एक और मजाल जलाई जाती है जो क्षेत्रों के दौरान जलवायी गहरी है।

औद्योगिक क्षेत्र एक दलेत पताका है जिसमें पांच जुड़े हुए स्थले अधिकृत होते हैं। वे स्थले, नीले, पीले, लाले, हरे और गाल रंग के होते हैं। औद्योगिक इतिवृत्तिताओं में पांच लेने वालों का भाग है 'दुर्गतर, जलनगर, प्रचलनर'। प्रतिद्वन्द्वियों की क्षमता सेनी पहुँची है कि वे इतिवृत्तिताओं में निर्द्वय होकर प्राप्त करें, क्षेत्रों के विषयों का उचित रूप से चालन करेंगे तथा अपने राष्ट्र का मान और क्षेत्र का गौरव बढ़ाने की इच्छा रखेंगे।

विश्व में स्थानि स्थापित करने और राष्ट्रों के बीच वैश्वी-मान और सम्भाव्य जालन करने के लिए ही क्षेत्र लेने वाले हैं। जाना है कि क्षेत्रों का यह उद्देश्य मार्बक ही होगा।

पगली

सोम उसे पगली कह कर पुकारते थे और हर बात पर उसका उपहास करते थे। वह तो मैं स्वयं भी नहीं जानता कि उसे वह नाम क्यों दिया गया पर मुझे उसकी हँसी उड़ाने वाले लोगों पर बहुत क्रोध होता था। जब मैं उसके विषय में किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका तो मैंने वह समस्या अपने कुछ मित्रों के सम्मुख रखी पर वह सदा प्रलय ही बना रहा।

एक सांझ का समय था कि पगली का विवाह साहसावस्था में ही हो गया था और वह विवाहित जीवन का कुछ अधिक दिन न उल्लासती; उसकी साँस का झिड़ुर सीमा ही पुँछ गया। वर्षा ऋतु में एक दिन उसका पति मरगु नदी के तट पर स्नान कर रहा था कि बाढ़ उसकी पत्नीत कर ले गया। पगली ने कई बार उसी तट पर लगे होकर बाढ़ को पुकार कर उसकी भी स्नाने की प्रार्थना की पर वह धिरेधी नहीं जाता। अंत में निराश होकर उसने स्वयं उस बाढ़ को ओझसे के पिछे पानी में डुबकी लगाई पर किसी ने उसकी क्या लिया।

कुछ लोगों का कहना था कि वह एक अनादिन था भी। उसके तीन पुत्र मारुभुमि की रक्षा करते-करते कुछ में बीरगति पा चुके थे और सबसे छोटा पुत्र मरगु नदी की घाट ही गया था। दुर्भाग्य के वन में ही वह पावन हो गई थी।

संयोग की वजह है, एक दिन संध्या को मैं अपने विचारों में सोचा मरगु नदी के तट पर टहल रहा था। अचानक मेरी दृष्टि पानी में डाली 'छय-छय' की आर सई और मैं पगली की नदी में डूबते देखा कर आश्चर्यचकित हो गया। मैंने जल्दी से पानी में छपाँव लगाई और उसे जैसे-जैसे तट तक खींच लाया। मैं सोच रहा था कि आज पगली के उसके जीवन का रहस्य अकस्मत् खुलूँगा। पर तट पर जाते ही उसका निर्वीन शरीर एक और को कुनक गया।

मेरी विज्ञप्ता झुड़ी यह सई। मेरे कुछ प्रत्यक्ष सब भी देख है— वह पगली की भी था नहीं ? उसे पगली क्यों कहते थे ? ...

A Message

St. Joseph's College Sports Shop—popularly known as S.J.C. Sports Shop—is situated within the College campus adjacent to the Gym Hall by the side of the first field. It opens when the College opens in March for $1\frac{1}{2}$ hours every day at games time during the week and closes on 31st October before the Final examinations of the year. The shop caters for the students' requirements in Hockey, Sports, Football, Tennis, Table Tennis, Badminton etc. etc., and also games kit such as stockings, shirts, ties, badges, beds, caps and cord. The articles are drawn by the students in general through the official slips issued to them from time to time and in accordance with the College Syllabus for games on behalf of the Principal. The boys can also



receive their requirements through the written permission of the parents. The bills are posted to the parents at the close of each month for the favour of regular payments. The list of arrears is put before the Principal once before the Mid-term examinations and again before the Final examinations.

The College however accepts and pays the bills regularly every month for the students whose parents stay outside India and the amounts are charged in their respective accounts with the College.

For the past decade and more, the Sports Shop has been managed by M/s Dua & Co., The Mall, Naini Tal, under the patronage and jurisdiction of the College authorities as well as direct control of the Vice-Principal. The bills are directly submitted by the firm to the parents in India and payments are received by the firm to avoid confusion in the College accounts. Final bills as well as arrears are submitted to the parents in November and should be paid by the first week of December.

The firm of M/s Dua & Co., have the following credentials at their credit :

- i. Messages by (i) Rev. Br. J.U. Morrissey
- (ii) Rev. Br. T.P. Fitzpatrick
- (iii) Rev. Br. J.N. Foley
- (iv) Rev. Br. J.A. Hughes

Class VI B



Back Row :

1st Row : K. Pandey, M. Sah, A. Ahmed, A. Tahirani, A. Shah, P. Sengupta, A. Joshi, J.L. Saha, A. Kapoor, S. Agarwal, S. Gupta.

2nd Row : Mr. J. Lalwani, A. Gupta, P. Rana, V. Nalwa, A. Mishra, H. Singh, B.J. Singh, A. Singh, P. Chopra, K. Nanda.

3rd Row : S. Saad, V. Sah, D. Dasa, A. Bhatt, T. Singh, S. Choudhary, M. Ramesh, M. Mishra, S. Virmann.

4th Row : D. Goudarzi, S. Sachdeva, R. Bagaria, A. Singh, R. Ali, A. Vaidhyan, R. Chakrabarti.

Prize Winners 1972

<i>Class XI</i>	Christian Doctrine		A. Gonsalves
	Moral Science		R. Kochak
	Proficiency	1st 2nd 3rd	S. Kant A. Mehra
<i>Class X</i>	Christian Doctrine		J. Liu
	Moral Science		A. Khanna
	Proficiency	1st 2nd 3rd	A. Pandey B. Bisht S. Kalra
<i>Class IX</i>	Christian Doctrine		N. Da Lima Leitao
	Moral Science		S. Joshi
	Proficiency	1st 2nd 3rd	S. Joshi M.S. Bhandari Hariraj Kishore
<i>Class VIII</i>	Christian Doctrine		M. Mathias
	Moral Science		R.K. Singh
	Proficiency	1st 2nd 3rd	V. Nayyar P. Jatra K. Pande
<i>Class VII A</i>	Christian Doctrine		N. Figueiredo
	Moral Science		N. Gandhi
	Proficiency	1st 2nd 3rd	N. Gandhi L. Merchant V. Makar
<i>Class VII B</i>	Moral Science		M. Bhatj
	Proficiency	1st 2nd 3rd	S. Seth A. Avasthi S. Kumar

<i>Class VI A</i>	Christian Doctrine		M. Castellino
	Moral Science		R. Bhandari
	Proficiency	1st	S. Sahai
		2nd	B. Pandey
		3rd	T. Shrivani
<i>Class VI B</i>	Moral Science		A. Tekriwal
	Proficiency	1st	S. Sachdeva
		2nd	S. Sood
		3rd	D. Dora
<i>Class V</i>	Christian Doctrine		R. Sarwal
	Moral Science		R. Kehr
	Proficiency	1st	A. Behari
		2nd	N. Castellino
		3rd	S. Mokerji
<i>Class IV A</i>	Christian Doctrine		G. Macfarland
	Moral Science		R. Kiroli
	Proficiency	1st	G. Macfarland
		2nd	N. Geel
		3rd	B. Machado
<i>Class IV B</i>	Moral Science		S. Nihalani
	Proficiency	1st	O. Malhotra
		2nd	G. Sarin
		3rd	S. Nihalani
<i>Class III A</i>	Christian Doctrine		R. Andrade
	Moral Science		A. Garg
	Proficiency	1st	A. Garg
		2nd	P. Tabering
		3rd	P. Kehr
<i>Class III B</i>	Moral Science		S. Tewari
	Proficiency	1st	S. Tanna
		2nd	P. Mathur
		3rd	S. Tewari
<i>Class II</i>	Christian Doctrine		C. Rodericks
	Moral Science		P. Smetacek
	Proficiency	1st	I. Bhasin

	and	R. Shah
	3rd	P. Pande
Class I	Moral Science	A. Tewari
	Proficiency 1st	A. Tewari
	2nd	R. Sah
	3rd	L. Negi
Science :	A. Mehra	
	D.P. Singh	
Hindi	S. Kaur	
	B. Bisht	
	J. Liu	(presented by Miss. S. Sud)
	V. Nayyar	(" " ")
	R. Tandon	
Art & Crafts :	J. Yum	Senior Section
	A. Avasthi	Junior Section
	P. Smetacek	
	U. Negi	
	R. Singh	
	S. Mukerjee	
	L.A. Khau	
	R. Sah	
	S. Singh	
	K. Thapar	
	T.L. Sah	
	J.S. Rawat	
	S.D. Sarin	
	P. Nelappan	
Photographic Exhibition :		
	K. Sah	1st
	L. Colaco	2nd
	N. Lima Leitao	3rd
Boating :	Winning Class Seniors	Class X
	Winning Class Juniors	Class IX
	Winning House	St. Francis'

Badminton :	Seniors Singles Winner	V.S. Sahai
	Middle Singles Winner	S. Lakhotia
	Seniors Doubles Winners	S. Singh & A. Mehrotra
	Middle Doubles Winners	S. Lakhotia & A. Mehrotra
Billiards :	1st Table	J. Liu
	2nd Table	R. Kamal
INDOORS :		
Chess	Seniors	H.R. Kishore
	Juniors	S. Sahai
Draughts	Seniors	R. Kumar
	Juniors	S. Baluja
Carrom	Seniors	V.S. Sahai
	Juniors	M. King

INTER HOUSE COMPETITION 1972

Winners	Hockey	Football	Cricket
First Field :	St. Paul's	St. Francis'	—
Second Field :	St. Peter's	St. Francis'	St. Peter's
Third Field :	St. Francis'	St. Peter's	St. Peter's
Fourth Field :	St. Francis'	St. Francis'	St. Francis'
Fifth Field :	St. Peter's	St. Francis'	St. Peter's
Annual Athletic Sports :	St. Francis'		
Aquatic Sports :	St. Paul's		
Cock - Home 1972 :	St. Francis'		

Our Donors 1972

The Principal, and the Sports' Committee have much pleasure in recording their sincere thanks for the generous donations given by the following parents, and also to those who elected to remain anonymous :

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------|
| 1. Mr Chaman Lal | 28. Mr V.N. Mehra |
| 2. Mr R.K. Narpat Singh | 29. Mr O.D. Nazareth |
| 3. Mrs M. Jacobs | 30. Dr Nawal Kishore |
| 4. Mr M.W. Hing | 31. Mr A.J. Rodricks |
| 5. Mrs D.R. Mehta | 32. Mrs F. King |
| 6. Mr S.S. Kochak | 33. Mr K.C. Sah |
| 7. Dr J.V. Figueiredo | 34. Brig. M.M. Chhabra |
| 8. Mr R. Srivastava | 35. Capt. P.G. Bhattacharya |
| 9. Mr K.L. Dua | 36. Wg. Cdr. J.K. Seth |
| 10. Mr R.C. Agarwal | 37. Mr D.D. Suri |
| 11. Col. R.L. Puri | 38. Mr K. Kong |
| 12. Mr G.P. Nayyar | 39. Mr S.S. Daramwal |
| 13. Mr M.R. Shervani | 40. Mrs T. Rocha |
| 14. Mr B.B. Soni | 41. Mr B.D. Sharma |
| 15. Mr R.S. Gujral | 42. Mr A.G. Pereira |
| 16. Mr S. Autar | 43. Mr H.X.A. Mascarenhas |
| 17. Mrs S. Smetacek | 44. Mr H.K. Vaish |
| 18. Mr J.K. Seth | 45. Lt. Col. U.C. Chopra |
| 19. Mr S.C.S. Master | 46. Mr V.N. Mehar |
| 20. Mr Hari Kishan Singh | 47. Mr C.L. Sasan |
| 21. Mr K.K. Agarwal | 48. Mr K.A. Tikku |
| 22. Brig. E.T. Sen | 49. Sardar Surat Singh |
| 23. Mr Vallabhdas Vitthaladas | 50. Miss D. Ireland |
| 24. Mr R. Kapoor | 51. Mr M.B. Lal |
| 25. Mrs K.K. Soni | 52. Col. P.C. Mehta |
| 26. Rani Manik Devi | 53. Mr J.T. Monteiro |
| 27. Mr N. Roy Chaudhury | 54. Mr R. Sahai Gupta |

- | | | | |
|-----|---------------------|-----|--------------------|
| 55. | Mrs N. Misquitta | 66. | Mrs M. Dunne |
| 56. | Mr Bharat N. Patel | 67. | Mr L.P.J. Andrade |
| 57. | Mr V.K. Agarwal | 68. | Mrs K. Pant |
| 58. | Mr S.L. Sah | 69. | Mr D.P. Sarwal |
| 59. | Brig. I.S. Karki | 70. | Mr D.N. Vaishnava |
| 60. | Dr J.D. Sharma | 71. | Mr K.K. Agarwal |
| 61. | Mr B.M. Pant | 72. | Mr T.K. Sen |
| 62. | Lt. Col. K.C.L. Sah | 73. | Mr N.S. Bhati |
| 63. | Mrs M.A. Castellino | 74. | Dr Kamal Schalekar |
| 64. | Mr S.S. Chauhan | 75. | Mr S.K. Gupta |
| 65. | Mr K.L. Chawla | 76. | Mr Ratan Lal Sah |

Class V



(From R)

1st Row : P. Pandey, P. Gargiani, S. Chatterjee, S. Haq, A. Joshi, J.S. Rana, S. Mathan, S. Rastogi, R.S. Taregi, A. Kishori, S. Panna.

2nd Row : R. Kher, N. Chatterjee, S. Ahmed, R. Rana, V. Taregi, V. Verma, N. Rayanoid, R.K. Pandey, S. Singh, K. Bhatnagar, M. Srivastava, Atab Joddy.

3rd Row : D. S. Nagi, P. Bhatnagar, D. Singh, V. Pandey, S. Bhatnagar, S. Bhatnagar, B. Singh, K. Bhatnagar, A. Mishra, S. Gupta, P. Lohani, T. Pandey, A. Bhatnagar, Mr. P. Medley.

4th Row : S. Agarwal, A. Sharma, Y. Kishan, B. Lohani, P. Singh, A. Pandey, P. Gupta, D. Bhatnagar, M. Kumar.

5th Row : K. Khan, A. Verma, S. Mishra, T. Lal, P. Jain, M. Bhatnagar, A. Gillani, B. Bhatnagar, P. Bhatnagar, S. Bhatnagar.

Adults : S. Mishra.

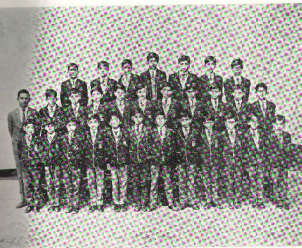
Class IV A



(L to R)

- 1st Row:* Mrs. G.P.C. Lal, J. Rocha, A. Banati, S.K. Gupta, D. Namrath, L. Rodriguez, S. Sethi, R. Dodi, N. Misquitta, M. Monteiro, S. M. Sahu,
- 2nd Row:* R. Gupta, G. Macfarland, N. Mishra, V. Marini, T. Culatti, J.A. Ruzicka, H.S. Gupta, R. Kanda, A.B. Das,
- 3rd Row:* S.Z. Wafarua, A.B. Pathak, B. Machado, N. Potnis, P.A. Das, N. Gopal, D. Rana, M.M. Singh, G. Raymond, S. Garg,
- 4th Row:* R. Viana, K. Gaur, A. Manonathan, D. Bhavir, N. Ecker, P. Deyane, S. Singh, A. Saxena, S. Singh.

Class IV B



(L to R)

Top Row : B. Malhotra, S. Joshi, V. Shetty, V. Sanyal, V. Tyagi, S. Bhanderi, R. Chandra.

Middle Row : Mr. B. D'Cruz, R. Pandey, P. Joshi, V. Surin, S. Ravasi, M. Sureshchandra, S. Akseer, S.K. Shah, A. Sah, S. Sah, G. Sarda.

Bottom Row : R.R. Rawat, M. Chandra, T.L. Sah, S. Nihalani, A. Joshi, O. Malhotra, A. Upadhyay, J. Reddy, G. Bhanderi, S.G. Joshi, P. Khanna, A. Bhatnagar.

Absent : M. Fillion, S. Luthra.

Class III A



(L. to R.)

1st Row : (Miss) I. Nigam, A. Lalwani, S. Mathur, P. Patel, K. Tandon, R. Pasigley,
S. Nigam, D. Namasath, S.P. Sani, N. Minosethia, J. Datta,
2nd Row : S. Feneera, T. Nalappana, S. Thapa, P. Kehr, P. Teshring, A. Gupta,
S. Srivastava, K. Chakraverty, C. Bhatt, S. Mehra, A. Abraham,
3rd Row : S. Sank, V. Bari, J. Malhotra, T. Gosh, R. Andrade, R. Arora, C. Fernandes,
Abhay Gera.

Class III B



(L to R)

1st Row: (Miss) S. Bhat, S. Hoss, S. Tandi, O. Mehra, K. Thapar, A. Shah, P. Mathur, A. Sahni, H. Singh,

2nd Row: N. Choudhary, S. Deyrol, G. Puriak, B. Shah, S. Agarwal, D. Barman, P. Shah, A. Misra, C. Joshi,

3rd Row: H. Pant, R. Thakur, S. Bhat, A. Ahmad, J. Lohar, S. Puriak, S. Sah, S. Tewari, S. Datta,

Class II



(L to R)

1st Row : M. Han, P. Singh, A. Pande, H. Shah, A. Joshi, Mrs. P. Medley, P. Joshi, R. Jain, P.J. Gannon, Vinay Puri, L. Loharia.

2nd Row : A. Tewari, V. Rana, V. Nihalini, S. Sah, M. Sarin, M. Ahuja, S. Sen, N. Ponnava, R.D. Puri, R. Dharma, S. Sah.

3rd Row : S. Bora, A. Singh, S.K. Sah, B. Singh, M. Koober, P. Joshi, M. Matha, M. Toman, P. Nataraj, R. Pannitha.

4th Row : P. Pande, A. Bhowin, G.R. Kapoor, M. Pannal, I.S. Bhatia, B. Singh, A. Khanna, S. Panna, R.K. Sah.

Absent : C. Rederick, R. Loharia.

Class I



(L to R)

1st Row: D. Kishogi, V.N. Sah, P. Joshi, R. Singh, H. Chhabra, R. Sah, R. Khosla,
S. Kumar.

2nd Row: U. S. Yogi, A. Sah, M. S. Bhatt, H. Chhabra, S. Pant, P. Tandon, A. Grewal,
K. Singh, A.A. Zaidi.

3rd Row: D. Pant, A. Tewari, R. Sah, S. Kachhar, D.S. Nagi, V. Varma, V. Sah.

About: Bhupinder Prasad

Teachers: Mrs. J. Lefevre and Mrs. W. Gannon.

CLASS MONITORS

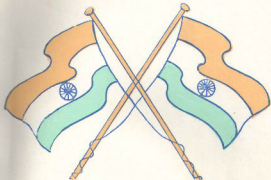


L. to R.

Back Row : N. Hayde, A. Vaidh, Principal, S.K. Jain, M. Virmani,

Middle Row : A. Bahmi, R. Bagrodia, R. Ahuja, S. Seth, P.S. Jangpangi,

Front Row : A. Mehta, S. Sahni, S. Sah, A. Elhanan, M. King.



Dedication

The Editor, Staff and boys of St. Joseph's College dedicate this Edition of the College Review to the Silver Jubilee of Indian Independence, to the sacred memory of the martyred heroes whose unstinted selflessness and patriotism made this day a living reality; and to the bright and glorious future that beckons to all Indian citizens. May the flame of freedom never flicker nor die in the breasts of the people of this vast nation.

"A moment comes, which comes but rarely in history, when we step out from the old to the new, when an age ends, and when the soul of a nation, long suppressed, finds utterance."

Jawaharlal Nehru

SISTERS OF ST. ANNE



Seated :

Sr. Justina (Hospital Nurse),
Sr. Rosamma

Standing :

Sr. Cyril, Sr. Lydia.

HINDI DEPARTMENT



Left to Right : Mr. R. Chandra, Mrs. J. Masud, Miss S. Sud

SCIENCE DEPARTMENT



L. to R.

Mr. S.C. Sah (Biology), Mr. D. Krishna (Physics), Mr. P.L. Sah (Chemistry).

OFFICE STAFF



L to R

1st Row : Mr. B.A. Feltus (Manager), Bro. Pakembani,
Mr. J.S. Bora

2nd Row : Mr. J.P. Sah (Accountant), Mr. D.C. Sah (Secretary),
Mr. M.K. Joshi (Jr. Accountant)



Mrs. W. Gomes,
(Assistant to Class 1 Teacher)

Mrs. Y. Tahir,
(Art)

Mr. T.M. Syed,
(Art & Craft)

Mrs. F. Gomes
(Gen. Supervisor)

First Holy Communion and Confirmation

As there were no Confirmations in 1971 this year we had a record number — seventeen to be Confirmed and six to receive their First Holy Communion. The doctrinal preparation was begun in March and the Sacraments were administered on the Feast of our Lady of Perpetual Succour.



A Concelebrated Mass on June 27th during which seventeen boys were confirmed and six received their First Holy Communion.

The college Chaplain paid several visits to the Catechism class to make sure that the boys had understood the meaning of the Sacraments they were going to receive. The Sisters and Staff members concerned got busy preparing pictures, medals and candles for the occasion.

The 27th of June found the school chapel and pews beautifully decorated. The boys who were to receive the Sacraments looked spry and span and even angelic with their pinned medals and decorated candles.

Bishop Cecil de Sa, the new Bishop of Lucknow, was paying his first pastoral visit to St. Joseph's and was the celebrant for the ceremonies. He spoke briefly but touchingly to all assembled and then conducted the service in the aisle so that all could witness the anointing.

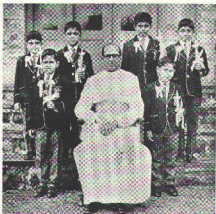
The Service was followed by a sumptuous breakfast for the boys, staff, parents and relatives who were present. Finally several photographs were taken. The Bishop and Principal were kind enough to sit along with the boys to make the photographic mementos cherished souvenirs.

His Excellency Rt. Rev. Dr. Cecil de Sa with the Confirmation Group along with Messrs. Lefevre and Keelor.



Front Row : N. Misquitta, D. Nazareth, H.E. Bishop Cecil de Sa, J. Lefevre, L. Rodrigues.
2nd Row : G. Macfarland, M. Montello, N. Keelor, V. Marini, J. Liban, G. Raymond, J. Rocha.
3rd Row : Mr. G. Keelor, R. Andrade, A. Gilbert, A. Lal, A. Mascarenhas, N. Raymond, R. Sarwal, Mr. J. Lefevre.

His Excellency Rt. Rev. Dr. Cecil de Sa
with the First Holy Communion Group



Front Row : S. Fonseca, H.E. Bishop Cecil de Sa, N. Mikquitta.
Back Row : J. Dias, D. Nazareth, C. Fernandes, P. Nelappanā.

Group Photo taken on the occasion of His Lordship's
visit to St. Joseph's on June 27th 1972.



Front Row : Br. Palenham, Br. Burke, H.E. Rt. Rev. Dr. Cecil
de Sa, Bro. Hughes, Fr. Paul (F.P.)
2nd Row : Br. Cornher, Br. O'Farrell, Fr. Fulgentius O.F.M. Cap.
3rd Row : Br. McGrath, Br. Bels, Br. Duff, Br. Murray,
Fr. Timothy and Fr. John.

Sports—1972

Ten days before Sports' Day, Sports' Week commenced. The oath taking ceremony was short and simple but definitely impressive. A great number of events was decided during these ten days but the most important ones were reserved for Saturday the 20th of May.

The long awaited day finally arrived and the Staff and boys were seen darting about in a flurry of excitement as last minute preparations were undertaken. The Athletic Meet was scheduled to begin at one o'clock and Maj-Gen. B.F. Gonsalves, AVSM, who had kindly consented to take the salute, was present punctually at the fixed time.



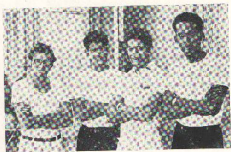
Maj-Gen. B.F. Gonsalves who took the salute.

The drums beat a tattoo as did the hearts of most boys nervously waiting to march out. Soon the boys poured out onto the field, looking wonderfully colourful in their house colours. St. Francis' house was in the lead followed by St. Paul's house. Then came St. Patrick's house, while St. Peter's house brought up the rear.

Immediately after the March-Past came the events for house points. The most spectacular of these were the "A" Division 100 m. dash, the various relays and a special event—the invitation relay. This owed its importance to the fact that it was run among the school staff, the visiting Christian Brothers and the boys. The boys emerged victorious with Brothers a hair's breadth behind.

The last event of the day for points was the Medley Relay. St. Francis' won this race in a record time, 1 m. 24.8 sec. The previous record had been 1 m. 25.4 sec. This concluded the competitive part of the Sports and the final result of the Meet according to the score board was St. Francis' first, St. Paul's second, St. Peter's third and St. Patrick's fourth. St. Francis' had won the day with a magnificent lead of nearly fifty points over their closest rivals.

Christian Brothers' Relay Team



Bros. Patrick, Noronha, Fernandez and Ballantyne.

A short tea break came next. Immediately after this came the drill displays which were truly breathtaking. The first of these was the rope work and, as the gymnasts trooped onto the field, lusty cheers went up.

I. S. C. Class



(L. to R.)

- 1st Row :* C.S. Jadhav, R.S. Keshav, S. Keshav, R.S. Keshav, S.R. Keshav.
- 2nd Row :* B. Singh, Mr. B. Chandra, Mr. H. Kishan, Mrs. J.A. Hughes, Mr. S. G. Singh, Mr. P.L. Singh, Mr. Suresh.
- 3rd Row :* H. V. Chandra, A. Chandra, J. S. Sandhu, R. Singh, A. Keshav, S. Singh, R. Singh.
- 4th Row :* P.S. Sharma, A. Taragi, R.E. Dastgir, J. Vyas, J. Chandra, N. Reddy, D.P. Singh, L. Kish.
- 5th Row :* R. Chandra, P.S. Ahuja, Y.S. Singh, R. Singh, R.S. Singh, A. Mahan, P.S. Sharma, P. Singh.
- Alone :* G. Chandra.

The boys, after long hours of patient and exacting practice, had finally become experts on the ropes. After beautifully executed stunts they left the field amid loud clapping and cheering.

Next came the drill display by the toddlers of classes one, two and three. The small boys though obviously nervous, made a bold attempt to give a good account of themselves. The applause from the crowd went far in assuring them that they had succeeded.

The horse work was the next item on the programme. The most interesting and eye catching was understandably the dive through the fire ring. This elicited many gasps from the spectators who were thrilled by the nerve of the performers.

The boys from classes four, five, six and seven marched onto the field next. Their drill display was beautiful because of the symmetrical motion of the boys' limbs.

The next drill was the Composite drill by classes four to eleven. The boys from classes 8 to 11 had bright red or blue ribbons along the seams of their white pants and some people called them band-masters. The various graceful motions of the boys were breathtakingly striking.

The final march past came next and the boys marched onto the field once more in the order in which their houses stood in the Sports. They marched up to the gymnasium outside of which the Prize Distribution was



Part of the Drill Display



Part of the Drill Display

held. Mrs. Gopala Reddi had agreed to give away the prizes. The outstanding boys were :

"A"	Division	Best man	J.S. Sandhu
"B"	Division	Best man	R. Marini
"C"	Division	Best man	R. Jain
"D"	Division	Best man	Y. Singh
"E"	Division	Best man	P. Gururani
"F"	Division	Best man	R. Sah

The most outstanding athlete was J.S. Sandhu.

The best gymnast was A. Gonsalves.

The Medley Relay Shield went to St. Francis' House, as well as the shield for the winning house.

Only two records were broken this year, the "D" division High Jump record by A. Bahmi and the Medley Relay record by St. Francis' house.

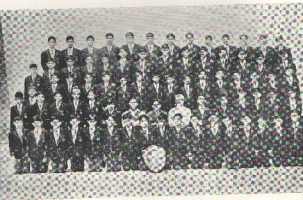
The prize distribution was followed by three resounding cheers for Mrs. Reddi. Thus the 85th Athletic Meet of Sem drew to a fitting close.

S. Kalra
Class X

GYMNASTIC



- 1st Row :* E. Lima Leitao, N. Goel, M. Pinto, L. D'Souza, A. Pande,
B.R. Singh, R. Gupta, S.R. Bhondary.
- 2nd Row :* V. Kociuk, P. Jangpang, A. Goncalves, A. Vaish, R. Saei,
D. Bhattacharya, R. Kociuk.
- Back Row :* Mr. G.F. Gomes, P. Basera, N. Rodricks, V. Paril, R.Kansul,
R. Marini, Mr. W. Gomes.



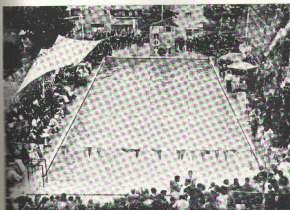
WINNING HOUSE—ST. FRANCIS'

The Tenth Annual Aquatic Meet.

"Swimmers, take your marks," the clear voice of the starter rang out over the blue, glimmering water of the swimming pool. The audience held their breath as the swimmers tensed for the plunge that would carry them on to victory—or defeat.

The swimmers plunged in at the signal and the first race of the tenth aquatic meet of St. Joseph's College began. The boys broke into a storm of cheering for the swimmers of their respective houses.

The first race was one of the most important races of the day. Two boys, both with their share of victories, had to battle for first place. Much



The Swimming Pool as the Aquatic Meet is about to start.

SWIMMING



Sitting : Mr. G.F. Gomes, L. Rai, Mr. P.L. Sah, Mr. T.M. Syed, N. Rodricks,
Mr. W. Gomes.

First Row : A. Joddy, L. Merchant, S. Alam, A. Agrawal, N. Gaudhi, S. Panetha,
M. King.

Second Row : S.P. Singh, R. Sircha, F. Master, A. Chhabra, R. Marini, V. Figueiredo,
A. Kariki, V. Kochak.

speculation had been done but no odds were offered by the most daring spirits. As the two main competitors cut through the water the spectators craned their necks to see the outcome of the race. The competitor from St. Francis' House won the race after tough competition from his only major opponent. This victory, the first after many defeats, sent his house mates' low spirits soaring high.

Some milken clouds blotted out the radiant face of the sun but could not dull the enthusiasm of the spectators. The morale of the winners was

high. All the swimmers were determined to do their utmost for the glory of sport and their House.

The Ducklings Race for swimmers from classes two, three and four promised to be interesting; it was up to our expectations. Three boys participated—the smallest, a student of class two—had the sympathy of the spectators. The sight of him—standing, with an exceedingly solemn expression on his face, beside comparatively tall boys won the hearts of the audience. He struggled gamely through the water, coming last in his race, but earning a loud clap from the spectators.

SWIMMING



<i>Sitting :</i>	A. Gonsalves	— Best Man "A" Division.
<i>Standing :</i>	M. Pereira,	— Best Man "D" Division.
	R.K. Gupta	— Best Man "C" Division.
	N. Gandhi	— Best Man "B" Division.
	M. King	— Best Man "C" Division.

When the announcer informed the audience that they were going to witness some exhibition diving, all heads turned expectantly towards the diving boards. The first diver came on to the one metre spring board and executed a brilliant hand stand dive. He received a loud ovation. Two other boys performed a jack knife and a plain dive respectively and were cheered according to their merits. The dives from the high board were accompanied by a solemn, awe-permeated hush during the performance and loud cheering after it.

Many events took place in rapid succession and as the afternoon lengthened into evening, the last event was held.

It was a water polo match between the I.S.C. class and the rest of the school. Both the teams were evenly matched and after an exciting game that lasted twenty minutes, the 'rest of the school' team were victorious.



Mr. A.C. Chatterjee, Inspector of Anglo-Indian Schools, U.P., presenting the prize to A. Gonsalves, the Best Man A. Division.

The victorious swimmers then stepped up to the chief guest Mr. A.C. Chatterjee, Inspector, Anglo-Indian Schools, U.P., to receive their prizes and his commendations.

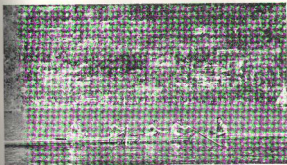
As the ceremony ended the sun broke through the clouds and warmed the chilled swimmers. Three cheers were voiced by the boys in honour of the Chief Guest and the spectators and participants dispersed, well satisfied with an afternoon's entertainment.

Amitabh Pandey
Class X

The Boat Race

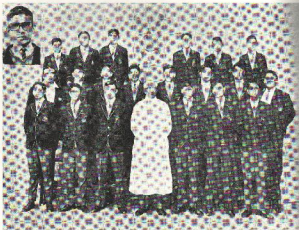
The morning of October 2nd, Mahatma Gandhi's birthday, dawned bright and clear. For most of us it was just another holiday and we went about the normal routine. But among the small elite of boaters there was an air of suppressed excitement for on that very day the finals of the Inter-House boating were to be held.

The boaters prepared to leave immediately after breakfast. The struggle for first place was between St. Francis' (yellow) and St. Patrick's (green). There was a good deal of argument and good natured rivalry between the members of the opposite teams. Since we were also given permission to watch the race a contingent of school-boys also accompanied the boaters. It was a very high spirited company that wended its way to the College boat-house.



Winners of Inter-Class Juries — Class IX.

ST. JOSEPH'S BOAT CLUB



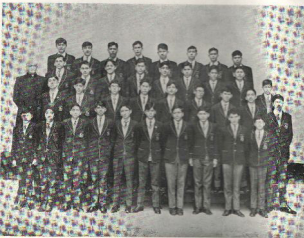
Front Row : L. Colaco, M. Virmani, M. Sen, Br. Burke, N. Hayde, V. Pari,
A. Kumar.

2nd Row : Mr. G.F. Gomes (coach), N. Lima Leitao, S. Singh, R. Abuja, R. Suri,
J. Liu, V. Figueiredo, Mr. W. Gomes (Coach).

Back Row : L. Lima Leitao, P.B. Shah, V.K. Singh, V. Mishra, M. Mathias,
N. Gandhi.

Inset : A. Chhabra.

P.S.C. Class



(L to R)

1st Row : B. Sah, A.S. Bhattacharya, A. Saha, B. Jais, B.P.S. Bhattacharya, K. Ghoshal, P.D. Saha, A. Pandey, V.K. Gupta, M. Mahapatra.

2nd Row : K.D. Sharma, V. Hingorani, P. Ghoshal, J. Liu, S. Kishore, S. Kalia, M.P. Jaisankar, N.K. Ghosh, S. Mishra.

3rd Row : Dr. Rishi, S. Bhattacharya, K. Bagchi, L. Chakrabarti, R. Karmali, V. Kishore, S. Saha, A.K. Choudhury, R. Saha, D.S. Saha.

4th Row : P. Saha, R. Akhija, B.S. Choudhury, V. Paul, A. Khanna, G. Paul, M. Virmani, A.S. Verma.



Winners of Inter-Class Senior Group — Class X

The boat-house soon became a hive of activity but the centre of attraction was the raft from which the boats moved off. "Many hands make light work" and it was not long before the two racers made their way to the starting point. A hush descended on the lake as the crews of both teams tensed themselves for the order to "Row". On the order "Row", the rival teams literally lifted the boats out of the water and sped along over its glossy surface. Gradually St. Francis' team took a lead but St. Patrick's were not going to give up so easily and soon closed the gap between the boats, yet St. Francis' team just kept a little bit ahead. Those not rowing secured some tourist boats and made their way to the centre of the lake to see the race all the better.

There was pin-drop silence and excitement rose to a fever pitch as the boats slowly came into view. The St. Francis' house boys gave a rousing cheer when the team in their yellow vests came into view just ahead of the rival green boat. The two competing boats soon outstripped the slow clumsy tourist boats and all we could do was wait for them to turn round the buoy and come back. As the low slung-racers faded from view the yellow boat was still in the lead.

When the boats came into view again from the other end of the lake the yellow boat was still leading and its lead if anything had increased. The yellow vested rowers pulled at the oars so spiritedly that their boat seemed to fly over the water. The green vested rowers also pulled manfully but were unable to catch up to the fleeing yellow oarsmen. When the boats were lost to sight again the yellow boat was so far in front the result was a foregone conclusion.

When the first race was finished and St. Francis' team had romped home as expected, a second race was held to decide the third and fourth places. The race was between St. Peter's and St. Paul's and after a hard struggle St. Peter's emerged victorious. After the races were over, photographs were taken and the boats put away. Then a small party was held at the boat-house. For the last time in the year we made our way along the path back to the college.

P. Gonsalves
Class X.

St. Joseph's Scout Rally—1972

The 18th of June was a Red Letter day for the boy scouts of St. Joseph's College Troup Naini Tal. Mr. C.E. Wilson, General Manager, U.P. Government Roadways, presided at the Scout Rally.

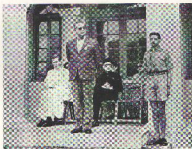
The National Flag was first hoisted by Mr. C.E. Wilson. The boy scouts after saluting the flag took the oath with the State Commissioner, Mr. Nawab Hussain.



Dr. Nawab Hussain, State Chief Commissioner of U.P., shakes hands with the Scouts after pinning the Tenderfoot Badges on them.

The Commissioner then invested thirteen scouts who were proud to receive their badges. The Commissioner having presented the General Manager of the U.P. Government Roadways with the scout badge on behalf of the scout troop.

The Commissioner spoke with great enthusiasm of the good work that is being done by the scouts all over the world, and was glad to see that



Mr. C.E. Wilson, General Manager,
U.P. Government Roadways addresses the Scout Troop.

the troop was progressing well. In conclusion he thanked the Principal and the Scout Master for their keen interest and help in the scout movement.

The scouts then gave a demonstration on the use of the various knots and the whipping of the end of a rope. Mr. Wilson was greatly impressed by the smart turn out of the S.J.C. scout troop and the demonstrations. In conclusion he thanked the Commissioner and the Scout Master for giving him this opportunity of presiding at the function.

The General Manager having taken the final salute, brought the function to a close.

SCOUT TROOP



1. to R

1st Row : M. Bharti, S. Tekriwal, M. King, Mr. G. Keelar, A. Chopra, H. Chopra, S.R. Choudhury.

2nd Row : P. Jindal, S. Shrivani, G. Bhatti, G. Singh, Y. Singh, I. Esbom, R. Bhattachar, N. Figueiredo.

3rd Row : S. Mongia, R.K. Singh, L. Mascarenhas, H. Chauhan, V. Nayar, R. Ahuja, R. Jagati, A. Sahai, H. Singh.

4th Row : S.P. Singh.

Tennis

Tennis was as popular as any other outdoor activity and it was indeed a rare occasion that the four tennis courts had not their full quota of players with others standing by for their turn. Various tournaments were held during the year. The Brothers who came up for their holidays were never without competition and we hope that when the boys leave school they will keep up their tennis. Unfortunately not many of them have the facilities that are at their disposal in St. Joseph's. The following is the list of winners in the Final tournament.

Singles	1st Court	Winner	J. Gandhi	Doubles	J. Gandhi & S. Kaur
		Runner up	H.V. Chopra	Doubles	N. Radricka & R. Kochak
	2nd Court	Winner	M. Sen	Doubles	N. Gandhi & S. Pande
		Runner up	S. Suri	Doubles	S. Suri & R. Goel
	3rd Court	Winner	S. Khosla	Doubles	S. Khosla & K. Chopra
		Runner up	R. Chopra	Doubles	M. King & S. Lakhotia
	4th Court	Winner	P.S. Sawhney		
		Runner up	R. Sarwal		

TENNIS FINALISTS



1st Row :

S. Lakhotia, P.S. Sawhney, K. Chopra, S. Suri.

2nd Row : N. Ghandhi, S. Goel, S. Khosla, M. King.

3rd Row : R. Kochak, N. Rodricks, J. Ghandhi, H.V. Chopra.

4th Row : Mr. G. Keeler, M. Sen, S. Kant.

Absent : S. Panda.

Independence Day Cup Final 1972

This year Sem struck back a blow in retaliation for last year's ignominious defeat. As if to commemorate the Silver Jubilee of India's Independence, they battled their way into the Finals. The result was that both Sem "A" and "B" reached the final from their respective groups. The "A" team qualified by beating C.R.S.T. while the "B" team beat Ghorakhal to step into the lime light.



A. Jedy receives the Runners-up Cup from the District Magistrate, Naini Tal.

This year, as in the past years, the Finals were held on the 15th August. As usual the crowd was as great as ever as it was felt that both teams would try to be the winners. It is to the credit of both teams that they really fought hard throughout. The game started on time and from the beginning it was evident that the teams were evenly matched. The "B" gave a good account of themselves and in a few minutes after the start of play they scored a goal. The game went on and neither side let the pace slacken. At half-time the "B" team were up one goal and the "A" were understandably disheartened

JUVENILES (A AND B TEAMS)



(L to R)

Top Row : A. Lakhota, S. Sahai, S. Pratap, P. Batra, R. Shah, S. Chowla, V.K. Sah, S. Goei, S. Suri (Capt. 'A').

Middle Row : Br. Burke (Coach), A. Wilson, M. King, P. Datta, M. Bhatti, A. Mehta, M. Pereira, A. Joddy (Capt. 'B'), P. Bana, A. Votra, Mr. B. D'Cruz (Trainer).

Bottom Row : P. Deo, A. Kapoor, M.K. Seh, Y. Verma, E. Lima Leitao, P. Swaroop, J. Sah, S. Zaman.



S. Surti Captain A Team receives the Winning Cup from the District Magistrate, Naini Tal.



Tea Party given by Mr. K.L. Datta to the teams.

Class IX



(L. to R.)

1st Row : S. Pandey, P. Goyal, M. Sen, Bm. C.A. O'Shea, A. Chhabra, A. Kumar, N. Hardin.

2nd Row : V. Pandey, S. Joshi, V. Shah, N. Ghazdhi, V.S. Sahay, S. Nalwa, A. Chaudhry, E. Pinto, A. Sah, J.R. Negi.

3rd Row : A. Sah, S. Akar, S. Kahan, R.M. Bhattacharya, A. Mathan, A. Sah, N.E. Khan, P.A. Singh, S. Tikhon, K. Sah.

4th Row : M.S. Bhambhani, L. D'Souza, A. Shah, F.K. Ahmed, N. Tandon, A. Shethakhar, C. Korian, A. Mitta, K. Mahajan, V.S. Pignatello.

5th Row : S. Singh, R. Singh, A. Vikram, S. Shah, G. H. deLima Leticia, A. Mehrotra, J. S. Kozak, R. Kumar, H.R. Kishore.



Eric Lima Leitao recipient of Silver Medal
in the Independence Day Cup Final.

but they made a creditable come back in the second half. After half-time the "A" unleashed blow after blow at their opponents and finally succeeded in scoring. The goal came off a beautiful lead which completely baffled the goal keeper E. Lima Leitao. The two teams were now on an equal footing and both were determined not to give way to the other, so it was not strange that the score stood at 1—1 at close of play. The Referee then tossed a coin to see who should have the Winning Cup the first half of the year.

S. Suri Captain of the A team won the toss. In addition to the Winners and Runners-up Cups, the teams were also

awarded two beautiful Cup-Shields in memory of Sri H.N. Pande who died this year and who had done so much to make this Tournament a success.

S. Ka'ra
Class X

Shri Pratap Singh, Advocate and Ex-Minister, U. P. Govt., very kindly presented a Silver Medal to Eric Lima Leitao for outstanding performance during the Junior Football Championship, 1972, organised by OBACFT Committee Naini Tal. We are most sincerely grateful to all the members of the Sports Committee for the interest they have taken in this tournament.

—Ed.

Table Tennis at St. Joseph's

During the past six years Table Tennis has received a great impetus at St. Joseph's. Five new tables have been bought and each boy, from the smallest to the biggest, is encouraged to take part in the various tournaments which have been organised. In 1970 we were the hosts to the 19th U.P. State Table Tennis Championships and again this year we played the host by offering accommodation to almost 150 competitors during the Pooja holidays. In 1971 we sent a team to Jhansi. That year the players of the Naini Tal team won the U.P. State Junior State Table Tennis Championships. On October 14th this year everything was in readiness for the competitors



Shri S.P. Mukherji, IAS, Commissioner, Kumaon Division, welcomed the participants to Naini Tal.

from all over the State and several teams had already arrived. By mid-day of the 16th all had arrived and the inauguration was fixed at 4-00 p.m. The Championship was inaugurated by the Chief Guest Padmashri Hon'ble Lt. Commander S. D. Pande who declared it open. There was an address of welcome by the Commissioner, Kumaon Division, Shri S.P. Mukherji while the introduction of the participants to the chief guest was done by the Organising Secretary Mr. Balbir Singh.

After the introductions, the games started and for the next week the five tables—3 in Hall No. 1 and two in Hall No. 2, were kept busy. All the Finals were held over until the final night, Saturday 21st. We were held enraptured by a display of T.T. by Manjit Dua & Prem Bedi who were invited from Delhi. At the conclusion of the games on the final night, a brief farewell address was delivered by Mr. C.E. Wilson, Divisional Manager, U.P. Roadways. The Secretary Mr. Balbir Singh then read his report. This was followed by Prize Distribution by the Commissioner who also addressed both the players and the Organisers and thanked St. Joseph's, the hours, for the wonderful arrangements they had made to make the Meet a success. Finally Mr. A.L. Bhas of the U.P. Table Tennis Association announced the Ranking for the Inter-State Meet in December. Ranking declared by Mr. A.L. Bhas :



The Chief Guest Padmasree Henry, Lt. Commander S.D. Pande is introduced to the players by the Organising Secretary Mr Balbir Singh.

- | | | | |
|---------|----------|----|---------------------------------------|
| Men : | U.P. No. | 1. | Rajeev Kapoor of Lucknow |
| | | 2. | Anand Dharwan of Kanpur |
| | | 3. | Gambhlee Kapoor & S.K. Dey of Lucknow |
| Women : | U.P. No. | 1. | Veenu Bhushan of Dehra Dun |
| | | 2. | Ratna Dey of Lucknow |
| | | 3. | Ragini Kacher of Dehra Dun |

- Juniors: U.P. No. 1. Rajeev Grover of Kanpur
 2. Manoj Bose of Lucknow
 3. Nitin Puri of Dehra Dun

This was followed by his sincere thanks on behalf of the U.P. T.T.A. and with that the 20th U.P. State & Inner District Table Tennis Championships came to a close.



Inter House Finalists with Br. Hughes & Mr. Balbir Singh.

Inter-House Table Tennis, 1972

	1st Table	2nd Table	3rd Table	4th Table	5th Table	Total
Sr. Peter's	2	2	4	3	4	15
St. Paul's	4	4	3	2	1	14
St. Patrick's	3	1	1	4	3	12
St. Francis'	1	3	2	1	2	9



Mr. Balbir Singh explains one of the finer points of the game to his youthful enthusiasts.



The Coach Mr. Balbir Singh explains the theory of the Top Spin to the boys.

Table Tennis Championships, 1972

1st Table

Singles : R. Kochak

Doubles : R. Kochak & N. Rodricks

2nd Table

Singles : G. Pant

Doubles : R. Kansal & G. Pant

3rd Table

Singles : S. Suri

Doubles : S. Suri & G. Singh

4th Table

Singles : R. Chopra

Doubles : M. King & R. Sawhary

5th Table

Singles : P.B. Rana

Doubles : P.B. Rana & A. Tekriwal

Boxing

Boxing had been one of the most popular sports in St. Joseph's College for many years. It was dropped from nineteen sixty-seven but was resumed this year. It received an enthusiastic reception and the boys attained a high standard of perfection under the expert guidance of Messrs. F. and W. Gomes.

As the Principal announced that there would be optional Boxing in our College, many boys wrote to their parents for permission. Daily, letters giving permission amassed in Mr. Gomes' office and, soon, the number of boxing enthusiasts reached fifty.

When the swimming season was finished, the school Gymnasium was suitably prepared for boxing which began from the seventh of September.

For the first few days, the boys were taught the fundamental principles and styles of boxing, along with some tricks of the trade. Then the main practice began. All boxers had to labour hard to become adepts.

Later on, the boys were divided into groups according to their weights. Since everyone could box well by then, we started having practice rounds in the ring. At the same time, punching bags were suspended on one side for the others to practice while they awaited their turn.

Slowly, as the days passed by, the Boxing Instructors made the list indicating the sequence of the bouts. This aroused excitement among the boys since there was only a week left for the Open Boxing Tournament to begin. During this week each boxer did his utmost and put every ounce of energy into practice.

When several practice bouts had been held in the evenings, the elimination tournaments or 'Knock-Outs' began. Boxers aspiring to prizes were all enthusiasm. The Gomes brothers were the referees and the matches went on under their guidance. Some scored straight wins and others were promoted on points. A spirit of sportsmanship was evident in all the bouts.

October the seventh was the day chosen for staging the final rounds. There was plenty of accommodation for the spectators. There were two

Finalists of the Boxing Tournament with Messrs. F. & W. Gomes
Boxing Instructors



1st Row:— H. Pant, A. Shah, M. King, E. Lima Leitao, P. Raatela, R. B. Patel.
2nd Row:— N. Rodicks, L. D'Souza, A. S. Mann, A. Karki, A. Pandit, S. Singh.
3rd Row:— V. Pari, Mr. G. T. Gomes, M. Sen, Mr. W. Gomes, Y. S. Negi.

cushioned-corners, painted red and green where the boys were to stand before and after their bouts. Red and green bulbs were set on their respective corners and the coloured light when switched on indicated the winner.

All the finalists were clad in white singlets, white short pants, white socks, keds and had a red or green ribbon tied around their waists. The day's programme began with the small boys' bouts. Each round of the bout lasted from 1 to 2 minutes—depending on the size of the boxers. This was followed by a short interval, during which the competitors returned to their respective, red or green, corners of the ring and rested while the 'Seconds' massaged their arms and legs in preparation for the next round. At the same time, all the spectators cheered loudly but during the rounds there was pin-drop silence. At the end of each bout, the referee got the points from the two judges and handed them to the Chief Judge who then announced the result.

Mr. Balbir Singh, who had kindly consented to preside at the Boxing Finals seemed to have enjoyed every moment of that evening. Keen competition was observed in every bout.

The programme was concluded by the prize distribution. One by one, all winners and runners-up went upto the ring to receive the prizes from the Chief Guest and returned to their places. The benevolent Mr. K.L. Dua had also presented a few prizes for the 'most promising and outstanding Boxers'.

At the end of the Prize Distribution, there was a round of applause from the boys as well as the staff members and Mr. Balbir Singh received 'Three Cheers' for being the Chief Guest. This brought the Boxing Finals to a fitting end.

Ajai Khanna
Class X

Our Billiards Club

Billiards in Seni have attracted a large number of fans, and the billiard room is one of the most frequented sections of the school on holidays. Boys flock to this room, in which there are three tables, immaculate in brown and green. Any person entering this hall is at once struck by the silence of the players and spectators alike. Save for the sharp clicks of the balls as they collide, silence is the keynote of this room.

According to the student terminology, the best table is known as the 'first' table. This table is nearest to the entrance. The green expanse of cloth feels like velvet to the touch. The tremendous weight of this large table is borne by stout and gracefully rounded legs, made of shining mahogany. The large shades overhead concentrate the light from the powerful bulbs above onto the table. A rack by the side of the wall supports slender, polished cues which are at the disposal of the club members. On the wall is a framed copy of the Billiard Rules to which reference may be made to settle disputes between players.

Next, by virtue of position, comes the 'third' table. This is a miniature table which is meant for inexperienced beginners. This table provides the players with basic practice.

Last comes the 'second' table, which is, like the first, of standard size, but somewhat inferior to it. This table is ideal for players with only one year's experience on the 'third' table. After another year on this table, the players are promoted to the 'first' table.

Each member of the club is allotted a particular time in which he can play his game. This enables every boy to receive his rightful share in billiards.

The Annual billiard tournaments are held in October.

Billiards are steadily acquiring popularity among the boys in the Senior section, and a game of billiards is anxiously sought after by boys on holidays.

R. Kanwal
Class X

Badminton

Badminton occupies a no less important place among the Indoor Games. A new court was put up in the Gymnasium this year fitted with lights to suit the requirements of the game. The monsoon tournament was very popular and attracted a large number of entrants.

This year it included an interhouse tournament in which the results were as follows : 1st. St. Francis', 2nd St. Peter's, 3rd St. Patrick's and 4th St. Paul's.

The individual tournaments attracted over a hundred entries. Monsignor C. George of Allahabad was the chief guest for the finals in which V. S. Sahai got the better of J. Yunus in the Senior singles; S. Lakhotia overplayed R. Marini in the junior singles; S. Lakhotia and A. Mehrotra fought hard to win against B.R. Singh and S. Khosla in the junior doubles and in the senior doubles, easily the best games of the evening, S. Singh and A. Mehrotra finally overwhelmed R. Kumar and V. Sahai.

Indoor Games Room

A placard with the words "Indoor Games" hung near the entrance of the Hall. As we entered it, we were immediately struck by its neatness. The tables stood in a double row and the games were neatly arranged on their respective tables. A dart board hung at the far end on the wall.

Suddenly the door opened and boys rushed in. Chairs creaked as they seated themselves. Some played their tournaments and their moves were accompanied by throaty cheers. The Chess players, however, were intent on winning, and their acute concentration did the famous philosophers credit.

The Cusom tables were occupied and the games were in progress. We observed boys playing 'Bluff and Rummy' as we walked past. Games of cards held a special attraction for the school's middle section.

The 'Darts' corner was crowded and the thuds were followed by cheers especially when the player scored a 'bull's eye'.

The Indoor Games Master, Mr. G. Keelor, was sitting nearby, absorbed in a game of draughts. Under his supervision, Indoor Games remain an extremely popular form of entertainment in our College.

G. Pant,
Class X

On the Spot Painting Competition

On the 8th October a group of young Artists along with their Art Mistress—Mrs. Tahir—left St. Joseph's at about 7.30 a.m. and made their way to the Children's Park to do On the Spot Painting. They returned in the afternoon with glowing accounts of their work. We listened to all they had to say and congratulated them but what was our surprise when a few days later we received a letter from the General Secretary, Sharda Singh, informing us that our little lads had won twelve prizes. P. Smetacek and U. Negi won the 1st and 2nd prizes in the 6 years age bracket. Rajinderjeet Singh and Sanjay Mukerji won the 1st & 2nd prizes in the 8 to 10 years group. In the 11 to 13 years group L.A. Khan won the 3rd prize. R. Sah, Satnam Singh, K. Thapar, T.L. Sah, J.S. Rawat, S.D. Sarin & P. Nelappana were also recipients of prizes. We offer our congratulations to the young lads and their Art Teachers.

'On the Spot Children Painting Competition'



(L. to R)

1st Row : Mr. T.M. Syed, R. Sah, P. Smetacek, K. Thapar,
T.L. Sah, U.S. Negi, Mrs. Tahir.

2nd Row : R.J. Singh, L.A. Khan, P. Nelappana, S. Sarin,
S. Singh, S. Mukerji. *Absent :* J.S. Rawat.

Munich My Dream

Rome, they say, was not built in a day. Noe, for that matter, are champions made in a short time. Both need sustained effort, patience and perseverance.

In the XVI National Shooting Championships, in April 1971, I had been able to win the Junior's title of Indian Rules Clay pigeon event. I had also done well in International Shooting Union Rules items, so much so, that I was considered for selection trials for the Asian Championships held in Seoul. Unfortunately, however, I could not make the grade and came back with the firm determination to do better the next time.

This opportunity came my way in April 1972. The XVII National Shooting Competition Championships were also to be the pre-selection trials for the Olympic Games at Munich and if I could shoot 75% or more I would qualify for the final trials while a score of 85% would take me to the place of my dreams—Munich.

I reached Delhi a couple of days before the matches were to start. During the practice the National Rifles Association of India officials issued only Indian Ordnance Factory ammunition and the scores of almost all the competitors were understandably low. Just one day before the competition AA (Winchesters) cartridges were given to us and there was a great difference in my performance—from 40-50%, my score went up to about 70%. This was very heartening indeed. It gave me much needed self confidence.

Delhi can be warm in April and when the competitions commenced on the 10th of that month, there was not only an inclement sun but also a fairly strong wind. These are hardly ideal conditions for good shooting but



it could not be helped. I made a shaky start, shooting 19 out of 25 in the first string. In the second string, when it was even warmer, the score went down a little 18 out of 25. In the afternoon it was slightly better $\frac{22}{25}$ in the III and $\frac{24}{25}$ in the IV string. This gave me a total of 76 out of 100. I had won a silver medal in I.S.U. Junior Clay Pigeon event—the gold medal going to the reigning champion, Princess Rajyadance of Bikaner.

The remaining 100 rounds were to be fired the next day and unless I shot 74% I would not be eligible for the final selection trials. Back at the U.P. Niwas I relaxed, massaged my aching shoulder and hoped and prayed that I would be able to give a good account of myself.

On April 21st, the next day of competitions, the sun was hazy but the day was very windy. In the fifth string I got a score of 19 out of 25 which was not too bad. By now however, my shoulder had started aching severely and in the sixth string I could shoot only 16 out of 25 birds. I started getting nervous. At this rate I would not have been able to qualify at all.

The lunch break, however, gave me the much-needed rest and in the VII and VIII strings I shot $\frac{22}{25}$ and $\frac{23}{25}$ respectively. My total score had now reached 150 out of 200 and I was selected for the final trials. Looking at the fact that I was the youngest, most inexperienced and most ill-equipped of all participants, my performance could not be considered unsatisfactory. Besides, I had the proud privilege of being amongst the first four male top shooters of the country who could be considered for the finals.

The selection trials opened a couple of days later with even worse climatic conditions. There was a blazing sun and a gusty wind full of dust and sand, hence it was no wonder that the scores of all the competitors went down. My position was third with a score of 158 out of 200 birds. There is no doubt that I had improved on my score in the Nationals but I could not qualify for Munich because I had not been able to shoot 85%. Alas! only twelve birds stood between me and Munich.

Meanwhile I had taken part in Indian Rules Clay Pigeon shooting events and I had done exceedingly well in them. In the juniors I retained my first position but the title went to Sanjay Gupta (who was second) due to an obsolete rule which lay down that in Indian Rules matches a champion is not entitled to any prize the next time.

However, my greatest triumph was to come in the open Indian Rules event. Here I scored 87% to win not only a Gold Medal but also the coveted Silver Maslanker trophy. The newspapers were enthusiastic about my performance and wrote under the bold caption "Shumshad Shahrukh Shines".

The Maharajkumar of Jaipur was also shooting in this event. He was second with a score of 78 out of 100. He had, earlier in the day, entered me in the Jaipur team which won the first place. This earned me yet another gold medal.

I have failed to go to Munich. I have also failed to get a good position in the International Shooting Union Rules Open Clay Pigeon Event, but I refuse to be discouraged. Reaching the top needs guts, practice, patience and perseverance.

Shahrukh Shumshad
Class X

The Tree Planting Ceremony

The year came around once more to the month of July and with it brought the tree-planting ceremony. On the first morning of July we were informed that once again there were trees to be planted and it fell to the lot of the P.S.C. class to represent the School.

It should not be thought, even for a moment, that we did not want to go or that we reluctantly accepted the offer. In fact, we were rather excited as pleasant memories of last year's ceremony flashed through our minds.

So, immediately after tea, cradling pick-axes in our arms, we made our way to the chosen site, which, unfortunately, was located just below St. Mary's Convent, a mere stone's throw from Sem; unfortunate because we had hopes of escaping the daily ordeal of study and it was natural for our spirits to sink. Anyhow, this ceremony offered a respite from the dull monotony of our extremely regular school-life.

The scene of action was decked with brightly coloured pennants which flapped in a welcome and lent the place a festive air and so it was a scene of colour and good cheer that met us. People, of whom there were rather few, hurried about making last minute preparations. Yet there was nothing frantic about their haste that marks most ceremonies, and despite the hurry those people exuded an air of calmness.

As for us, we came right in and immediately made a dash for the only chairs in sight, that is, in the area for students. We had absolutely no intention of standing since it seemed that we would soon have some rain. Overhead, dark, grey, sullen clouds grimly surveyed the scene as they threatened to burst any moment and spew out their watery contents and, in spite of the colour and festivity around, they lent a gloomy atmosphere to everything, and we fervently prayed that the weather would hold.

A sudden excited whisper diverted our interest from the proceedings. Coming down slowly were the girls from the adjoining Convent. The poor 'ladies' looked rather embarrassed and confused as they darted furtive glances at the occupants of all the chairs around.

It was then that some chivalrous young lad from our merry clan had the bright idea of offering them our chairs. Anyway, we complied, and I'm afraid, rather added to their state of confusion. Still, some of the bolder girls shot us gratified looks as they passed us.

As a sort of compensation for our 'sacrifice' we were congratulated by one of the Nun chaperones on our gentlemanliness and chivalry.

Soon, some thoughtful organiser provided us with a few chairs and we settled down to wait for the beginning of the ceremony. Exactly half an hour after the appointed time an official of the Forest Department arose to say a few words. Those 'few words' ran into pages and it was with a great effort that we managed to focus our attention on his words but their aspecific effect was quite evident after a few minutes. However, the main point that he tried to drive into our minds was the dire necessity for more trees. The lack of trees to hold the soil compactly was the cause of the loss of valuable fertile topsoil.

From all this we gathered that in planting the seedlings we would be given, we would not be making a mere gesture to be forgotten once completed, but taking part in a massive and concrete drive to restore to the earth its lost mantle of green.

Various other prominent people and officials addressed us, but the idea they tried to convey to us was basically the same, though differently worded. It so happened that the speeches were very like those at Hamunagarh last year and so extremely unenlightening and uninteresting.

We were quite relieved when an official turned to Mrs. Soni, the wife of the Chief Guest, and requested her to give away the shield to the winning institution for last year's tree-planting. The trophy was won jointly by All Saints' School and Sainik School. Sainik School took it for the first six months because they had sent no representative since they were on vacation.

Then yet another official arose and informed us about the location of the various plots and their respective plants. Plot No. 4 was allotted to us, while St. Mary's took No. 5, adjacent to ours. We were also told that a change had been made in the method of judging the winners in future. The adjudicators would concern themselves more on the effort made in tending the trees instead of the number of surviving trees. The number of visits

paid would be recorded and be largely instrumental in deciding the final results.

Seedlings were distributed and we fell to our task with a will. As it is said many hands did make light work and soon we had all fifty marked spots bearing young trees. We were tired and dirty.

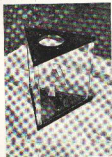
As we turned towards school we were most pleasantly surprised on our way up. A group of ladies was busily distributing packets of sweetmeats and we gladly went forth to receive our share and the sweetness that soon pervaded our mouths only served to enhance our cheerfulness; but the thought of study was a fly in the ointment. Nevertheless, we strode school wards with light steps and after a quick wash on reaching, settled down to study, although we were not in a fit state of mind for mental exercise and to some of us at least, tree-planting is not half as arduous as study.

Sanjay Kakra
Class X

The Moon Rock comes to Sem

The 'moon' came to Sem on the 9th of June since Sem could not go to the moon. As we circled the glass case containing the specimen of moon rock, we felt pangs of disappointment for the rock was no different from any of those on earth. Save for some silvery dots on it, it was greyish-black and roughly oval in shape.

Yet, there was a silver lining in our cloud of disappointment. Immediately after the exhibition, classes 10 and 11 were directed to the



The Moon Rock in its glass case

auditorium to hear discourse on the recent developments in space travel and research behind it. The speaker was Mr. David Good, an American who turned out to be an extremely eloquent person whose manner of speech was devoid of the nasal slur so common in Americans, and was quite easily understood.

As we filed into the auditorium we saw various people who had come with the rock specimen. The most prominent member of this group was Prof. Goel, a research scientist from I. I. T. Kanpur. Incidentally, Prof. Goel was one of the 2 Indian Scientists entrusted with the important job of

analysing the rock brought from the lunar surface.

The subject of the lecture was "The Spin-off benefits of Space Research". In the period of an hour, numerous startling facts were revealed to us, as quite unimaginable things were converted to solid reality. It gave us a renewed faith in man's capability as we envisaged the enormous amount of progress made in the course of a decade of extensive research.

Mr. Good started by expounding the fact that space-research was

Class VII A



(L. to R.)

1st Row: S. Puri, K. D. Darda, V. Verma, A. Joshi, K. Sah, Md. Sajid, M. Pereira, V. Mukar, R. Saha.

2nd Row: N. Gadhil, R. Chopra, N. Figueiredo, S.K. Gupta, V. Correy, R. Bhattachar, L. Marchant, M. Rang.

3rd Row: Y.S. Nandil, H. Kauri, B.S. Eustacey, V. Singh, P. Joshi, R.K. Gupta, A. Sharma, J.B. Sharma.

4th Row: A.V. Singh, A. Agarwal, K. Frazee, N. Gulati, M. Joshi, A. Dattani, A. Burski, (Class Teacher) - Br. T.A. Candler.

greatly beneficial to man and that the theory that some people have that the research is a senseless waste of money, was utterly groundless. He then cited various examples of how mankind had benefited. The various ways are far too numerous to name but a few will suffice: -

Communication in a few years will no longer be the problem it is today. Satellites will be able to relay intercontinental messages, handling over a 1000 at a time. The result will be that a man will be able to speak across untold miles to another in a matter of moments. Also backward countries will be greatly aided in their educational programmes by the transmission of various lessons by television to relieve the governments of their gargantuan responsibility.

The blind, deaf and the crippled will be able to overcome their handicaps by means of revolutionary devices which are still in the experimental stage.

These facts and many others were pleasantly revealed to us and it was a most enjoyable time. All around, boys industriously took notes, lest they forget any of the revelations.

Meanwhile, Mr. Good continued as he went on to describe the forthcoming gadgets which were still in the blueprint stage. Curiously, all these devices were originally made for the space travellers and their space-ships but they found their way into our daily lives.

Take for example the monitor system used by doctors responsible for the astronaut's health. It enables doctors on earth to keep track of a space traveller's respiration, bloodpressure, temperature and various other factors governing his health. Now in large ultra-modern hospitals this system is being adopted to keep track of a patient's condition from a central, vantage point.



The Moon Rock exposed.

As he concluded, he informed us that he would welcome questions concerning the space programme. Immediately many hands shot up and various questions dealing with various aspects of the moon were put forward.

Save for a few unintentional slips like "Are there any earthquakes on the Moon?" and the type, the questions showed a sincere yearning for information and most of the facts we had ever wanted to know were explained to us in detail.

The occasion was unfortunately cut short because time ran short but as we moved out we felt content, a feeling that can only come when one has taken part in something worthwhile.

We discussed the facts we had learnt, with assiduity, as we compared notes. The things that we had never imagined to be true and which seemed to be from a space-age saga were finally brought home to us as hard reality, and our thirst for knowledge was greatly intensified and far from satiated and it encouraged us to keep up more with the present day changes but, for the moment, anyway, we were satisfied and elated.

Sanjay Kalra
Class X

A Nightmare Journey

That miserable day when we had to return to college, arrived. It was Saturday the fourth of March. One by one the boys began arriving at Palam airport with their baggage.

The first mishap of the day was caused when all the boys brought their trunks along with them and there was no room for them on the buses. So Br. Burke and Mr. Lefevre went to Kashmiri gate to hire a truck. Meanwhile the Bombay Party arrived, one hour late. Due to the unpunctuality of our departure, many parents began complaining about the delay.

On the other hand, the boys were enjoying themselves. Some were talking to old friends, relating past incidents, while some were making friends with the new boys. A few stayed with their parents, thankful for having been given more time to stay with them.

Eventually our teachers hired a truck, and the two buses accompanied by the truck, left the airport at about eleven a.m. Our bus, which was in the lead, soon reached the outskirts of Delhi. As there was no sign of the second bus and the truck, we stopped to wait for them. Our half hour wait proved fruitless. Finally when we were about to turn back, cursing our bad luck, we perceived the second bus coughing and spluttering along its way. Later we learnt that while our bus was on its way, the second bus just wouldn't start, and after a lot of pushing, it started and joined our bus, and we were soon on our way to Naini Tal.

The next tragic incident soon occurred when we lost our way in an attempt to take a shortcut. Anyway, we made a joke out of it and eventually reached Moradabad around five p.m., about four hours behind schedule.

Being in a cheerful mood, we climbed onto the roof of the bus and amused ourselves. A few boys began relating incidents about what they had done during the holidays. It was not until the teachers called us for tea, that we realized we were ravenously hungry. We went to the tea stall and had a delicious tea.

Unfortunately the truck was delayed, so our bus had to wait for it, while the other bus sped away. After about half an hour, the truck arrived and we left Moradabad at about six p.m. For an hour or so everything went well, when all of a sudden we had a puncture. There we were, stuck in the middle of the road, with no light and no proper apparatus with which to change the wheel. Anyhow, after waiting for some time, we managed to stop a truck, which readily lent us the required instruments. After an hour or so, we fixed the wheel and carried on.

Later we learned that the other bus had also had a rough time. On nearing Billaspur its battery failed, and it had to be towed to the nearest workshop. The man in the workshop said, after nearly forty-five minutes, that it could not be repaired, while I am sure he was well able to repair the bus.

So the bus was towed to the next town, where we found a workshop with some difficulty, and managed to get the bus repaired after about an hour. By the time the job was done our bus also arrived and the two buses followed by the truck again began their interrupted journey. All went well until we reached Kathgodam, when the lights of one bus failed and we had to change buses. At this time it was past midnight.

Since there were no big buses in Kathgodam, we had to squeeze ourselves into a smaller one. We reached Naini Tal without incident. On finding no coolies at the bus terminus to take our baggage to school, we decided to spend the night in the bus. There was great confusion and merry-making in the bus. Everyone was feeling hungry, so the boys ate whatever food they had from home. Eventually we managed to get some sleep.

To culminate the misery of the journey, we had terrible hail and thunder throughout the night. It eased off at about 4 a.m. and then as Br. Burke could not sleep he went for a walk round the lake and got back in time to collect some coolies and wake up the boys in the other bus.

Rajiv Suri
Class X

Sem during 1972

JANUARY & FEBRUARY

The usual repairs were carried out on the school. The weather was very bad during February and hence much of the proposed outdoor repairs had to be abandoned. Four Sisters arrived at the end of February. Sr. Justina - Nurse; Sr. Lydia, Cyril and Rosamma - Mastrons.

MARCH

- 4th. The School party arrived at the bus terminus at about 1.30 a.m. after a night-mare journey. We were greeted by thunder, lightning and hail throughout the night.
- 6th. We welcome Messrs. Moore & D'Cruz to the staff.
- 14th. Coughs, cold & flu are very much in evidence as the weather is extremely cold.
- 18th. We had a pleasant surprise by the arrival of two Christian Brothers from Australia who were on their way to Rome. Bro. M.T. Lander B.A., B.Sc., M. Ed., F.S.C. is a member of the Australian National Catholic Education Commission and also a member of the Queensland State Board of Secondary School Studies. Br. F.R. Hickey, M.A., M.Sc., M.Ed., F.S.C. is a Novice Master in one of the Australian Provinces. They were enchanted with the views of the Himalayas and the snow capped mountains.
- 29th. Brs. Mc Grath, O'Sullivan, Bela, Bennett and Walsh arrive.
- 31st. Brs. Pakenham & Conway arrive

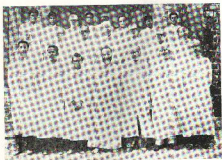
APRIL

- 1st. Brs. O'Sullivan, Bela, Bennett, Walsh & Conway leave today. N. Rodricks, G. Goncalves, K. Sharma & V. Kochak went to Pantnagar for T.T. along with Messrs. Korlor & D'Cruz.
- 4th. The I.S.C. results arrive. We had 34 Firsts and 2 seconds no third and no failure. Congratulations to all the Staff who worked so hard to get this result.

- 11st. Class picnics were held during the past fortnight. Fortunately the weather was good.
- 22nd. Sports' practice starts today.

MAY

- 3rd. The Literacy Home, Lucknow, gave a puppet show which was both instructive and amusing.
- 4th. We welcome Drs. Finn, Lobo, Noronha, D'Souza, Fernandez, Morrow & Conway who have come to St. Joseph's for a holiday & a Catechetical Seminar.



Back Row : Drs. Pinto, Noronha, Conway, D'Souza, Akaramathan, Pin, Lobo, Fernandes.

Middle Row : Drs. Cruise, Morrow, Lonsan, Dizon, Murray, O'Keefe, O'Farrell.

Front Row : Pinto, Ballarone, Patasik, Fr. Legrand, Drs. Foley, Bick, O'Donohue.

- 9th. Dr. Lyng left this morning for Ireland for a holiday. More Brothers arrive. Col. Francis very kindly took the salute at the March past in the opening evening of the Sports' Week. He also addressed the competitors lucidly.

- 17th. During the week more Brothers arrive. We are happy to have them with us.
- 19th. St. Mary's Sports.
- 20th. St. Joseph's Sports. His Excellency the Governor of U.P., Dr. Gopala Reddi presided and Mrs. Reddi kindly gave away the prizes. About two hundred boys went for their holidays after the Sports.
- 31st. Fr. Legrande who conducted the Catechetical Seminar as well as some of the Brothers left today.

JUNE

- 4th. Feet on the Flats in aid of the disabled children of the district. We had a terrible down-pour this morning.
- 5th. The boating started today.
- 8th. We had a most interesting film on Apollo 15, the Walk on the Moon & Lunar Museum of the '70s.
- 10th. A group from the U.S.I.S. very kindly agreed to show us the Moon Rock here at St. Joseph's. Mr. David Good gave a very enlightening talk to the boys in the Auditorium afterwards.
- 21st. In the afternoon we had a visit from Dr. Ramji Lal, Minister of Education, U.P., Sri. S.N. Chaturvedi, Secretary, Education U.P., Sri S. N. Sharma, Joint Secretary, Education, U.P. and Mr. R.C. Tewari, Inspector of Anglo-Indian Schools, U.P.
- 22nd. His Excellency the Governor & Smt. Reddi invited the Brothers and the Sisters to be their guests at a farewell lunch today. We are sad that they are leaving in as both His Excellency and the Lady Governor were loyal friends of the College. We wish them the best of luck.



- 27th. Feast of Our Lady of Perpetual Succour. Rt. Rev. Dr. Cecil de Sa, Bishop of Lucknow, said Mass in the College Chapel, gave their First Holy Communion to six boys and confirmed seventeen others.
- 29th. The monsoon has reached the U.P. at last.

JULY

- 3rd. Mr. R.C. Tewari, Inspector of Anglo-Indian Schools, U.P., has been transferred. This is another link broken in the chain of friendship. We wish him every success.
- 10th. Tree planting ceremony.
- 31st. The Core Examinations started today.

AUGUST

- 3rd. Our juvenile "B" team beat C.R.S.T. "B" 2-0 in the first game of the Independence Day Cup.
- 5th. Mr. G. Kendall of Shakespeareana fame entertained the boys with extras from Macbeth, The Merchant of Venice and A Mid-Summer's Night Dream.
- 8th. Our juvenile "A" team beat Govt. High School 4-0 in their first game of the Independence Day Cup.
- 15th. Holiday. Both our A and B teams had reached the Finals and met for the match on the Flats. The score at the end of the game was 1-1. Our sincerest congratulations go out to the people of this vast country for their wonderful achievements over the past twenty-five years.
- 18th. Mr. A.C. Chatterji, the new Inspector of Schools, inspected the school. He expressed great pleasure at all he saw.
- 21st. Swimming practice every evening.
- 26th. We just got word that Noel & Eric Lima Leitao lost their father. The Editor and Staff offer their sincerest sympathies to Mrs. Lima Leitao and her family on their great loss. May his soul rest in peace.
- 27th. Rev. Frs. Castallino & D'Souza came to give the Catholic boys their Retreat.

SEPTEMBER

- 4th. Monsignor George, an old and distinguished past pupil of the school arrived for a brief holiday. We hope he will have a happy and peaceful rest.
- 5th. Teachers' Day was celebrated by the boys by going to a Film in the morning and the Swimming Sports in the afternoon. Mr. Chatterji, the Inspector of Schools, very kindly consented to preside and give away the prizes.

OCTOBER

- 2nd. Gandhi Jayanti was celebrated by offering special prayers at Mass, the Flag hoisting, the Finals of the Boat Race and a march by a large number of the boys along the Mall in the evening.
- 7th. The Finals of the Boxing were held tonight. A good standard of boxing has been reached in a very short time.
- 15th. Preparations for the 21st U.P. State & Inter District Table Tennis Tournament which is being held at St. Joseph's are now complete.
- 19th. The tournament is under way and all the Officials and competitors are happy with the arrangements made for them at St. Joseph's.
- 21st. Finals of the T.T. followed by speeches and prize distribution.
- 22nd. All the Competitors left today and now we have to get the dormitories and class rooms ready for our own boys who are returning this evening.
- 23rd. Classes start today for the last round before the Finals.
- 28th. The weather has got really cold—overcoats are put on in the mornings and evenings.
- 31st. Oral Hindi for the I.S.C. today.

NOVEMBER

- 2nd. All Souls' Day—Three Masses.
- 6th. Dewali was celebrated in a lavish scale at St. Joseph's.
- 7th. I.S.C. Chemistry practicals start today.
- 16th. The Junior School finished their Examinations today.
- 17th. All the Juniors leave for home today.

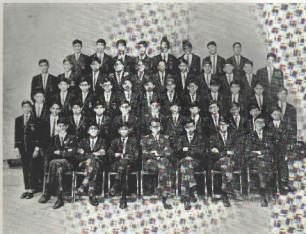
20th. Examination fever and solid study are the order of the day. Prizes for the various activities of the school have now been given out and the boxes are gradually being packed. All are looking forward to going home.

DECEMBER

- 2nd. All the Examinations are now over and the home parties left today.
3rd. The Bombay, Calcutta, Delhi and overseas students leave today.

We now say Good Bye to Br. Hughes who completed his term as Principal, to Br. Mc Grath and to Mr. & Mrs. Lefevre who are going to another school, and we welcome our new Principal Rev. Br. Kyle, and Br. Walsh.

Class VIII



(L to R)

1st Row : S. Taragi, V. R. Singh, R. K. Andrua, P. Jaipangli, M. Singh, H. Singh, S. Deyal, P. Mohan,

2nd Row : H. Chaudhary, P. Jindal, A. Sakai, S. Kishin, L. Manganakas, R. K. Singh, S. Mohan, G. Singh, A. S. Karki, M. Mathias, V. Nayyar

3rd Row : S. Paloud, K. Gool, R. I. Saha, K. Pooja, T. Ahmad, S. Sach, G. Singh, K. Chavira, G. Doshi, A. Kapoor, K. Maysam, S. M. Dina

4th Row : R. Anand, I. Ektray, S. Sachdeva, S. Gool S. Sani, P. Lina Lina, A. Khalil, P. Datta, N. K. Joshi, S. Sharda, S. R. Choudhary, A. K. Joshi,

Front Row Sitting : R. Marini, P. Abaja, D. Bhattacharya, Mr. F. Moore, C. Gilbert, S. Jain, D. Gaudin,

History of St. Joseph's

(continued from last instalment)

Summary of Previous Years

St. Joseph's Seminary, originally located in Darjeeling, was transferred to Naini Tal in 1887. It was opened as a Seminary at the latter place in 1889. After long negotiations it was handed over to the Irish Christian Brothers in 1893 and since then the Christian Brothers are in charge of it. For various reasons the number of pupils until 1898 did not exceed 140. The history of the school in those pioneering days was one of difficulty coupled with the building of the huge stone structure that a visitor to Naini Tal sees today. The herculean work that went on in levelling the playing fields and building the high walls is still a source of wonderment to the visitors to the College. With this brief introduction we now invite our readers to the second instalment of the History of St. Joseph's.

During the early months of 1901 the large and small playgrounds were levelled so that by the time the boys returned they were ready for use. The boys began coming back during the first week of March. During those days the results of the High School and Primary School Examinations also began coming in. The Seminary was inspected by Mr. Budden on the 10th July. This is a resume of his report. "In the last Inter-Schools' Examinations the school did very well indeed, passing 30 out of 57 candidates. I inspected each of the classes and found them in most respects in very good order. The boys are evidently taught carefully and efficiently and kept well in hand. In addition to volunteering the boys are put through Drill Exercises with clubs and dumb bells. What I saw them do was well done. The Building and equipment was in good order. An excellent supply of scientific apparatus and diagrams for Physics and Chemistry was available. The school seems to me a thoroughly good one in which careful and educational work is done". Perhaps the best way of giving the reader an idea of the progress made is to give an extract from the Principal's Final Report for the year.

Naini Tal Fine Arts Exhibition: As in former years, our pupils again sent in specimens in Froehand, Pencil Shading, Model Drawing, Perspective, Geometrical Drawing etc. Of the 8 prizes offered for competition in the class in which they competed, five were carried off by the Seminary. The "Pioneer" of October 12th referred to the Seminary Exhibits as follows:—"Among the boys' schools, St. Joseph's Seminary carries off the majority of the prizes, sending in excellent work in Geometrical Drawing, Perspective, Model and Froehand".

Athletics: The Naini Tal Gazette carries the following account "Two large playing fields have lately been laid out at the Seminary. The boys have generously practised and trained themselves to rough it on the playing field—an excellent preparation for the rougher struggle that awaits them when they engage in the great battle of life. Seventeen times did the 1st Eleven appear on the Flats in contest with one or other of the other football teams in the Station and seventeen times came off victorious, taking with them in the end the Rampur and Secretariat Challenge Cups—the only two cups offered for football competition during the season." Handball, cricket, hockey and tug-O'war also got their full quota of time. **Science:** Considerable trouble and expense were gone to in fixing up a Science Room for the teaching of Physics and Chemistry. **Music:** Two music instructors have been added to the Staff. It is a decided advantage to our pupils to have two such talented and painstaking instructors and parents should largely avail themselves of the opportunity and allow their boys to take lessons while they are young. We have this year started a Fife and Drums Band in connection with the Naini Tal Volunteer Rifle Corps under a competent Band Master. The boys have taken to it with great zest and it is to them a source of much enjoyment. Later on we hope to see it develop into a regular Band. **The Staff** now consists of Eleven Brothers, two secular Masters, one Urdu professor, two music instructors, one band master, one nurse and two matrons. The number on the Roll has now reached 273.

For the year 1902 the first thing that I have to note is the change of name from St. Joseph's Seminary to St. Joseph's College. The institution had long since out-grown the dimensions of a Seminary. With its 200 odd boarders, its 20 day-scholars, its school and college, the well-appointed Science Hall, its commanding position, its extensive play-grounds, the success of its students at the various examinations and their fame as athletes of a

most promising type—the time had come in the ordinary evolution of things when a change of name was necessary. Though in parting with the "Seminary" we felt like parting with "some dear familiar face" whose smile had often cheered us along the thorny paths of life, yet in deference to the wishes of the Fathers of the Diocese and of many friends among the parents of the children, as well as to give effect to the Diploma of affiliation received from the Allahabad University in May '92, constituting us a College, we at length agreed to adopt the new designation. The institution will, therefore, be henceforth known as St. Joseph's College. Rather than bore the reader with the list of Examination results we give briefly here a resume of our results in the Educational field for 1902.

	No. Presented	No. Passed	No. of Scholarships won
Primary	19	19	1
Middle	28	27	3
High	11	10	1
Calcutta			
Entrance	3	2	—
Fine Arts	3	3	1
Total	66	61	6

Comparing the passes in St. Joseph's College at the Examinations in the United Provinces at a whole, we have

United Provinces, of the total sent up

72 per cent passed in the Primary

69 " " " " " Middle

58 " " " " " High

St. Joseph's College, of the total sent up

100 per cent passed in the Primary

96 " " " " " High

Here also we give the results of the various matches played on the flats.

Football—No. of matches played—14

Result—12 Victories and 2 Draws

Trophies—1 cup; 17 silver medals and 6 bronze medals

Hockey—No. of matches played—11

Result—10 Victories and 1 defeat

Trophies—1 cup and 11 silver medals.

The Annual Sports were held on October the 9th of the year. The

"Lake Zephyr" of 15th October 1903 gave a full page account of events and results. These follow a pattern each year and need not be included.

1903 The year under review was on the whole a very successful one. The attendance went beyond our highest expectations reaching the figure of 246. The health of the College was excellent with the exception of a few cases of measles which broke out in the early part of the year. The results of the various examinations were all that could be desired. In the Primary School, of the twenty candidates who were presented, eighteen passed; four of whom got scholarships. Seventeen of the nineteen who sat for the middle school passed, two of whom secured scholarships. In the High School twelve out of fifteen passed and one got a scholarship. Thus of the 9 Scholarships offered for competition to the boys in the United Provinces, 7 virtually fell to St. Joseph's College. Two pupils were presented for the First-Art Examination, four for Civil Engineering and four for Upper Subordinate. Eight got admission into the Engineering College at Roorkie. The Indian Daily News of August 26th commented on our Roorkie successes as follows "The success of the Irish Christian Brothers in the school education of boys in Bengal has long been acknowledged, and every year fresh proofs are afforded at the Government Examinations of the soundness of their methods. They are now making their influence felt in other directions and the college at Naini Tal, where there are special classes for training boys for admission to the public services, is quite in the front rank of such institutions".

In the "Six-a-side" "Ranpuz" and "Secretariat" Football Tournaments the College won all the matches with a list of Trophies which include seventeen silver medals and two silver cups. In the Gymkhana Hockey Tournament we won a silver cup and 11 bronze medals. The boys were examined in Christian Doctrine, Bible History and Church History at the year by the Diocesan Inspectors, in accordance with the syllabus prescribed for the Diocese. The answering was most satisfactory. On the 27th & 28th of August the school was examined by Mr. Murray, Inspector of Schools and among his laudatory remarks we find "there is evidence of good work in every department of the School". I have watched the growth of this establishment over the years since it was taken over by the Irish Christian Brothers and each year shows a wonderful advancement on the previous years.

1904. During the year no less than 70 new boys were admitted. The withdrawals numbered about 50. The only improvements effected during the winter were the flagging of the top verandah and refitting the boards of the floor in the old dormitory. About the middle of April the members of the Education Commission, appointed by Government to enquire into the condition of Hill Schools, visited the College. They consisted of the Director-General of Education, the Directors of Public Instruction of the Punjab, Bengal and the United Provinces and the Inspectors of Schools of Bengal and the United Provinces. They entered into a thorough enquiry into the working of the College. They asked for suggestions with reference to having one general course of studies for all the Provinces and for raising the standard of Education in all the schools. On the 13th of May a Literary and Debating Society was inaugurated at St. Joseph's. To spare the readers the monotony of wading through a list of academic achievements during the year, we give in brief a summary of our results for 1904.

55 passed in the Code Examinations with 9 in the First Division; 6 Scholarships in the same examination out of 9 offered for competition.

6 Roorkes succeeded with 2 Scholarships.

2 Admitted to Coopers Hill

2 passed the Intermediate Arts

1 second place in the Survey of India

1 second place in the Opium examination

1 Gold Medal for the best English Essay.

Since we opened the Special Department four years previously, 23 pupils have passed into the Public Service. Rather than bore the reader any further with lists of our achievements in Games and Sports, we will conclude by quoting from the Annual Report for that year. 'In recounting our successes we are influenced by no boastful spirit. We simply state facts just as they are—facts which the parents of the children and the public have a right to know. If St. Joseph's College has in a comparatively short time, attained a high degree of eminence, much of it is due to the loyalty of our pupils and the fidelity with which they respond to their teachers' efforts.'

In 1905 the number of applications far exceeded that of any previous year. The only extension to the college was the erection of a Playshed which was completed towards the end of May. Owing to ill health Rev. Holland was obliged to resign his office at the end of July. His place

was taken by Br. Columban Doherty. Examination results, sports and games still remain at the high standard of previous years. Two Houses' Courts were made and each class had its own teams and Holidays and Half Holidays were usually passed in matches between the different classes. A new feature of this year was the Volunteer Sports. The dates were fixed for the 11th & 12th of October. The College Volunteers entered with zest and were rewarded by winning the vast majority of the Prizes. For the third year in succession the College won the Best Man's Cup. In the shooting and signalling competitions the College won the first and second prizes in both events.

By the end of January 1906 all the vacancies were filled up and yet more boys sought admission. Very little was done by way of improvements as we were still trying to pay off the debts of previous years, as the contractors were loud in their demands for payment. However, for the first time new residential quarters were provided for the teachers and though they may be considered poor by modern standards, the teachers were happy that they could arrive dry at their classes during the monsoons. The results of the various examinations were well above those of the other Colleges in the Province. We now turn from the region of books and examinations, and we shall occupy ourselves with the play-grounds and all appertaining thereto. If the successes of our Athletics be measured by the number of cups and medals brought home that year from the "Flax", then I should be inclined to say that they had fallen off. It could not be said that our teams were not as active and vigorous as formerly but now the other teams had decided that it was time that they, too, should have a share in the victories and hence it was that the standard of games had risen considerably. That year two tournaments solely for the College boys were inaugurated and carried through very successfully. One hundred and fifty boys took part in these tournaments. Our boys took the lion's share of the prizes. The Art Exhibition attracted a large number of parents and friends to the College at the end of the year.

In 1907 as in previous years the number of applications received were far in excess of the number we were able to admit. During the winter months the boxroom was lengthened by some twenty feet. Now our boxroom accommodation is quite ample. The health of the school was good throughout the year. Mr. J. Murray, Inspector of schools, on his visit to St. Joseph's in September the 16th paid the following tribute in his report "Convinced of the benefit of games and manly exercises and knowing that

the parents of the boys share their convictions, the Christian Brothers have spared neither pains nor expense in the physical development of their students. Hockey, football and handball have been played regularly throughout the season by the majority of the students. Tennis is also in evidence among the Senior students. Their first elevens, though coming into the finals in three of the tournaments, fell before the military in football, while they had to yield the palm to Secretariat in hockey. On the Primary, Middle and High School Examination fifty-eight passed out of sixty presented. There were two appointments to the Survey of India, three qualified for admission to the Forest Service, three for Roorkee, and one for Northern India Salt Department. This is a record to be proud of and I wish this institution even greater success in the coming years."

In 1908 we find that an addition of considerable dimensions was under construction and it was hoped that it would be completed by the end of the year. The new addition enabled the authorities to set aside special halls for libraries and reading-rooms while at the same time indoor games rooms were provided. This year the students had to their credit 1st, 2nd, 3rd & 5th places in the High School; 2nd place in the Salt Revenue; 1st, 2nd, 3rd & 6th places in the Roorkee Upper Subordinate, 1st, 4th & 7th in the Roorkee Civil Engineering, and 1st place in the Superior Grade Accounts.

Our readers, at this stage, must not imagine that we cultivate the intellect at the expense of Physical development. Hence I may be pardoned if we put before the readers a brief resume of our achievements on the playing fields during the year. It was a pity that the representative "Elevens" were severely handicapped—a number of the players being ill during the tournaments—they had a fair amount of success. Playing with substitutes from the Junior Department of the school they worked their way into the finals of the Rampur and Rufeher football tournaments. The military teams here proved too heavy and won the cups though only by a narrow margin of one goal in each case. In the Secretariat Football Tournament the College Eleven defeated the civil and military teams of the station and represented Naini Tal in the later stages of the tournament. In the Moonsoon Football Tournament our team once more proved themselves champions. Since this tournament was introduced in 1902 the College teams have won it six times. The College Sports were held on the 6th of October. During the evenings in October and November, school tournaments were held in handball, tennis

and football. There was no interference with the ordinary school routine and it has been found that better study is done when provision is made for the useful expenditure on the physical energies of the boys. Of the total strength of 300 cadets in Naini Tal Volunteer Corps, St. Joseph's contributed 133. If the roll of drums, signalling, heliography, military evolutions in hill and plain and the frequent practice at the Rifle Range spell efficiency then the Naini Tal Volunteers should be considered almost perfect. Our youthful warriors brought home several prizes. A team of eight commanded by Captain Hickey won the Imprey Shield—the prize for endurance and accurate shooting.

The year 1909 was no different from the previous years from the point of view of scholastic attainments, general health of the school and accomplishments of the games and sports' fields. The Staff now consists of twelve Brothers, two secular teachers, two matrons, a trained Nurse and an Urdu Professor. We give here the names of the Brothers who were on the Staff that year. Bro. Columban, Holland, Weir, Acton, Meckler, Collins, Loneragan, Conney, Cullane, Connolly, Paul and Nugent. Mr. Murray, Inspector of Schools, paid his annual visit to the College on the 30th August. Among other remarks, his report has the following note "The Staff has been strengthened since the last inspection by the addition of one member of the Order and was strong enough to permit of allotting a member of the Order to every class in the Institution from the Infants to the Special and College Departments, except one of the sections of Standard V, Standard III and Standard II which were under three secular teachers". "In all the classes taken by the members of the Order the work reached the usual high standard". "The School did very well indeed in the last School Board Examinations passing 14 out of 15 (with five in the First Division) in the High School Examination and 14 out of 22 (with one in the First Division) in the Middle School Examination. There seemed to have been no weak subject in the High School for practically every candidate passed in every subject offered". We may be pardoned if once more, we take a brief account of the College Sports from the "Lake Zephyr" of that year. "What impressed one during the Annual Sports at St. Joseph's College on Thursday was the magnitude of the celebrations combined with the attention to detail which enabled the great gathering to witness every event in perfect order. The grounds were elaborately decorated, every vantage point being brought

under contribution, while the graceful folds of the Irish and College flags floated from the tips of the new masts, as if presiding over the myriad miniatures on the play ground below. The programme was a full one consisting of the usual events at athletic meets. The competition was keen, while the applause which greeted the winner in each event, showed the interest of the spectators. The open events attracted a large number of entries. Thirty-seven ladies were heavily determined to solve the mysteries presented to them in rather ominous looking sealed envelopes. Soon the busy brains were at work and after some time all the counters were at the judges' stand exhibiting the skill of their fair partners. The whole sports meet was a scene worth treasuring in one's memory."

In 1910 the number of applications for admission far surpass that of any previous year amounting to about 160 before the reopening of school. By the end of March the boarding accommodation was filled up so that several boys had to be refused. Death claimed a victim on June 12th when Walter Cumming died. He had been ill from the 24th of May and the doctors at first thought that it was malaria but when it was too late they found that it was enteric. A number of cases of enteric developed but fortunately none was fatal. A complete check and overhaul of the sanitary condition of the lavatories was necessary and under medical advice they were removed to a more suitable site. The epidemic passed away and there were no further cases from that day onwards. The results of the various examinations continued to be good. Extracts from the Public Gazettes and other lists show the relative positions of the various Colleges when they measure strength in public competitions. In the Primary Examination five of our candidates won scholarships. These took First, Second, Third, Sixth and Eighth places in the list. Our Middle School did not do so well—two of them won Scholarships. In the High School of the 21 candidates sent up, 20 passed—4 in the First Division, 9 in the Second and 7 in the third. The School was inspected on August 13th and the report states that the inspector was satisfied that the school was in its usual state of efficiency. During the year Reading and Science Rooms were built. A new chapel was also completed. The College was also furnished with a complete set of desks, maps, blackboards, charts and other apparatus which added not a little to the efficiency of the teaching. In the football and hockey fields the teams representing St. Joseph's were on the whole, successful. The "Jackson

Memorial Football and Hockey Cups" were won by our teams early in the season. The Rampur Challenge Cup found its way back to St. Joseph's after a long absence. Tennis, football, handball and hockey tournaments were carried out in our play-grounds in a manner which makes every member of the school an active participator. Those of you who remember your own school days will acknowledge that the employment of the spare time of the students is one of the most anxious problems that the school staff has to cope with. There has been a wonderful revival in music among our pupils. A trained and certified teacher, who got her diplomas in England, is in charge of this department. There were twenty pupils instructed in the piano and violin and all of them secured honours in the examination at the end of the year.

The year 1911 was on the whole a very successful one, the numbers were higher than in the previous years; the health of the boys was excellent. Prior to the re-opening of school in March some improvements were made which doubtless added to the good health of the College. The roof of the Boys' Refectory, kitchen, scullery, godown and science room was raised by four feet. New Night Lavatories were erected for the boys and the entire drainage system of the College was renewed. The furnishing of the new additions to the College as well as the fitting up of the Physics and Chemistry Rooms was taken in hand as soon as the school closed for the winter holidays. The following trophies found their way to the College during the year. The Jackson hockey and football cups competed for by boys under 18 years from the three Naini Tal schools; the Rufner football cup for which the adult teams competed was also won by our boys. The Impey Memorial Shield—the coveted prize in Volunteering remained with us for the third year. Our school tournaments went off well. They helped to keep up an interest in athletics and afford an opportunity of playing to many who, without them, would perhaps never acquire a taste for games. The results in the various examinations left nothing to be desired.

The year 1912 gave us every reason to be thankful to God for all His Graces to us. The health of the school was excellent, there being no epidemic of any kind; the boys did well in their Examinations and in games held their own against the other teams in the station. Some more improvements were carried out during the month of December, January and February. The Physics and Chemistry Laboratories were fitted up to modern requirements.

Class VII B



(L to R)

- 1st Row : A. Mishra, D. Negi, M. Shail, S. Tekriwal, M. Joshi, A. Aravshi, D. Hooda,
S. Kumar, V. Pandey
- 2nd Row : Ben. Duff, A. Qalder, S. Saha, S. Upadhyay, D. Basal, S. Puriya, A. Ujjawal,
V. Shrivastava, F. Dattaraj, S. Agarwal
- 3rd Row : N. Sharma, S. Satin, S. Sethi, B. Singh, S. Mongia, S. Lakhotia, A. Chopra,
S. Shrivastava
- 4th Row : R.S. Das, S.P. Singh, S. Dhanwan, C. Tanning, R. Jagati

Gas was installed in the science room, the Boys' Refectory, Kitchen, Special Class Room and the Brothers' rooms. The Staff was strengthened by the addition of Br. Cyril Webster. The Primary, Middle & High School Examinations are still the tests of literary ability in the schools of the U.P. In the Government Examinations held in December 1911, fourteen of our students passed the High School, four in the First Division. In the Middle School, we had twenty-one passes with four in the First Division. The following table gives a summary of the more important successes of the College in Public Examinations for the past fourteen years.

Record in Government and Departmental Examinations,

1898-1912

(a)

Government Examinations.

Primary School— 151 passes with 48 in the First Division

Middle School — 214 " " 13 " " " "

High School — 181 " " 11 " " " "

First Arts (Allahabad University) 11 passes with 2 First Divisions (only for the last two years)

(b) Departmental Competitive Examinations.

Upper Subordinate Rooster	36	Admitted
Civil Engineering "	19	"
Survey Department	5	Appointed
Upper India Salt Revenue	4	"
Superior Opium	2	"
Superior Grade Accounts	1	"
Deputy Collectors	"	"
P.W.D.	6	"
Forest Department	4	"
Police	2	"
Accountants	5	"

The total value of scholarships won by our pupils for the past fourteen years amounted to Rs. 41,120/-

1913 The usual list of results of the examinations held in December 1912 reached the College early in March. They excelled all previous results. As this was the Silver Jubilee or the 25th Anniversary of the foundation of the College; preparations for the celebration of the Jubilee

were started shortly after the boys return to school. During the years various improvements have been made. These have been mentioned already in these pages. Between 1908 and 1912 the East Wing comprising the Brothers living rooms, library, chapel, physics and chemistry laboratories and the two towers flanking the central block were erected at a cost of Rs. 87,834/-. The latest addition to the College property was the purchase in 1913 of the Donaldabad Estate for Rs. 20,700/-. The building then erected afforded classroom accommodation for the Preparatory school as well as residential quarters for the lay members of the staff.

Physical Culture: The boys have three hours outdoor exercise each school day and of course longer periods on play-days. The physical education of the pupils may be taken under the following heads (i) Gymnastics and Swedish Drill (ii) Volunteering and Military Drill (iii) Scouting (iv) Rowing and Swimming (v) Organized games. In these activities every boy from the smallest to the biggest has ample scope to develop all the qualities which school games, when played in a proper sporting spirit, are intended to bring forth. Influenced by the College motto "*Certa Dunum Certamen*"—fight the good fight—the boys are taught to accept success without arrogance, and defeat without repining; and that the highest duty of a gentleman in every circumstance and condition of life is "to play the game"—a liberal education in itself. The College has its own Boat House and Boats on the Naini Tal lake, and a fully organised Boat Club.

At this stage the Cambridge Local Examinations were held for the first time in St. Joseph's. The Cambridge course is divided into three grades: the Preliminary, the Junior & the Senior. Each grade is a two years' course. The Preliminary covers the work of Standards V and VI, the Junior that of standards VII and VIII and the Senior, especially Senior Honours, corresponds to a certain extent with the work required for the Intermediate Arts of the Allahabad University.

On September 27th the Jubilee Celebrations began. On Sunday morning the 28th a solemn Mass of Thanksgiving was presided over by His Lordship the Bishop of Allahabad. A large gathering of priests and past pupils was present on the occasion. On Monday the students gave a musical and dramatic entertainment to all Naini Tal. At this function the Lieutenant-Governor presided. The Governor again presided at the Jubilee Sports on Wednesday. The grounds were thronged with a gaily dressed crowd and a

brighter or happier gathering had rarely met together in Naini Tal. It was a brilliant day and a brilliant success. The College was illuminated throughout the week, and there was a display of fireworks on Thursday night. At the Old Boys' Dinner on Wednesday night, there was a genuine overflow of loyalty and devotion to the Alma Mater of many of her scattered sons. The celebrations were a magnificent success and showed clearly the estimation and affection in which St. Joseph's College is held by all. Contributions poured in from parents, past pupils and well-wishers from the richest to the poorest to help in making these celebrations an outstanding success.

With this we end the second instalment of the History of the College.

(To be continued)

Past Pupils 1972

We received several letters from past pupils during the year, all enquiring about the College. It is possible that since those letters have been received, the writers have progressed in both the literary and social fields and so we hope to be pardoned if any information is not up to date.

Derek Soares writes from Calcutta where he has gone to complete his fourth year in training in Marine Engineering. "The passing out parade at Bombay was a great day. I won the Samaji Morarjee Trophy for the Best All Round cadet. I came 1st in the Bharat Lines Technical Essay Competition & the D.M.E.T. Tech. Paper Reading and and in the Barucha Memorial Extempore Speaking Competition. **Rajani** is now in the 4th year I.I.T. and **S. Gutt** who is in the 3rd year has been elected Entertainment Secretary. **Franz D'Sa** won a studies-free scholarship to the United States. **Denzil Pereira** is doing well and is on the football team at St. Mary's. **Geoff** and **Lyndsay** are doing well and Geoff's grades in the I.I.T. were excellent; he got 9.76 out

of 10. **Brian Jacobs** is in the first year I.I.T. with Civil Engineering." **Benild Pires** writes from British Columbia regularly where he is working as a Staff Correspondent in the Canadian Press. He is very happy there and expects to get his Canadian Citizenship within the next three years. **Glen Braganza** has almost finished his training in flying. He hopes to get a post as Assistant Traffic Officer with Indian Airlines.

S. Chatterji is studying at D.A.V. College Chandigarh for his 1st Engineering. **Ashok Jain** is in the same College doing his Pre Medical and **D.S. Khara** is doing his B.A. in the same College. **N.Seth** is doing Economics at St. Stephen's. **Maneesh Chaurasia** is in I.I.T. Kanpur doing Well. **Vinit Joshi** also joined the institute. He appeared in competitive Examinations for I.I.T. Kanpur. Out of 28,000 boys in which mostly students of Intermediate and B.Sc. appear he came 68 in his Kanpur Zone alongwith two other boys of St. Joseph's College. He has taken Chemical Engineering. He secured an average of above 81% marks in his 1st Mid Semester and is

showing good and steady progress. In his extra curricular activities he stood for the post of Senator in his Institution and won it by maximum number of votes. Out of every 60 boys there is one Senator for each year. There are 4 Senators in 1st year. Senate is the Supreme policy making body of the Institute and Gymkhana of students consisting of 2100 boys. **Milan Joshi** is doing his M.B.B.S. at All India Medical Institute, Delhi. He is showing a good steady progress in his studies. In his Mid Semester this year, he has topped in "Microbiology" both theory & practical and 'Pathology' theory examinations. He could not take part in Sports last year due to eye trouble. This year he has shown a good progress in sports. He was selected as a member of the "Table Tennis" team in the first All India Inter Medical Cultural week in 1972 and also as a member of "Badminton Team" in 1st All India Inter Medical Cultural week in the year 1972. He has also been selected for the College team in "Tennis". **Laxmiya and Manoj Joshi** graduated last Semester and **Anwar Ali** got his Master's Degree. **Akshobh Singh** (S.C. '64) kindly gave me the following information. **Anoop Mukherjee** (S.C. '66) is in Delhi University doing his M.Sc. **Mukul Joshi** (S.C. '67) is doing his M.A. in Delhi

School of Economics. He is also Cultural Secretary of Jubilee Hall. **Akshobh himself, Shakti Rana, P. Bilimoria, N. Mehta** are in the Faculty of Law. **P. Bilimoria** is Captain of the Table Tennis team while **Akshobh** is involved in working for a number of academic societies of which he is an executive member and is also Editor of the Faculty paper. **K.C. Singh** has given up study and is busy running his farm in Kashipur. He is also the patron of all wrestling activities in the area. **S. Mehrotra** (S.C. '64) is looking after his family business in Kashipur and lately became the proud father of a baby girl. **V. Tuli** (S.C. '64) is also in Kashipur looking after his shop. The Dhirga brothers—**Gurvinder** (S.C. '61) & **Satvinder** (S.C. '64) are in Delhi looking after their factory.

Tariq Quraishi (S.C. '63) qualified for the I.P.S."

Vivek Dar is doing Economics Honours. He hopes to graduate in April, after which he will try for a post in the State Bank or the I.A.S. **Atul** will also be finishing his M.A. in Economics about the same time. He has already been called for an interview as he has got through all his Exams. **Vivek** is also studying for his History Honours. His cousin **Arvind Dar** is now working in

some advertising firm and is being paid Rs. 1,000/- a month with all benefits included.

Doggy Rana is studying in the "All India Institute of Medical Science". **N. Kohli, Behal, Jagdeep & Taragi** are studying in the same college as **Amul and Vivek Dar**. **V. Sharma** (S.C. '64) is doing post graduation at the Dental College of Orthodontics. He has also been working as a House Surgeon in the Medical College Hospital, Lucknow. **S. Gulati** is in the I.I.T. Kanpur. **S.A. Hazratji** is at present studying in the 2nd year M.B.B.S. in G.R. Medical College, Gwalior. He topped the 1st terminal Examination and is now getting a scholarship. After leaving St. Joseph's he did his Intermediate, in April '71. He passed it in the first Division with distinctions in Physics & Chemistry, from La Martinere College, Lucknow. Earlier this year he did a tour of the U.S.A. and sent some beautiful coloured photographs of his travels. **Dalip Kapour** (S.C. '69) is in his B.A. Economics Honours Final year. **Capt Sherry Sapru** (S.C. '63) graduated in May '67 from the M.D.A. to join the I.M.A. along with **Shiv Jaswal, Zoom Shah and Gopal Tandon**. In '68 they were commissioned from Dicha Den. Shiv is a rapper and a parachutist. Zoom is a gunner while Gopal and

Sherry are in the Kumaon Regiment. Shiv has got married. **C.P. Kala** (S.C. '63) is also in the Kumaon Regiment. At present Sherry is A.D.C. to G.O.C. **Ashok Daftary** paid us a visit during his honeymoon. He was to leave shortly for the United States for further studies. He has completed his M.B.B.S., B.Sc. **Ashok Agarwal** (S.C. '66) is working in Durrah Shell Bombay. He was married at the end of May this year. **H. Netarwala** is doing Commerce at Sydenham College. **S. Soni** is at present in Canada attending Algonquin College of Business in a three year's Business Management degree Course. He takes on some extra work after class and gets almost \$ 400 a month. **Rui & Charles Figueiredo** are in Canada and the entire family are moving there early in 1973. The Figueiredos have long been associated with St. Joseph's. We wish them all the best of luck in their new sphere of activity. **Patrick Cantwell**, whose name has often been mentioned in the pages of the Review over the past years, is now back in England after a long holiday in the U.S.A. **Saniv Chawla** (S.C. '70) is in Shri Ram College doing his B.A. Economics Hons. **Anoop Misra** (S.C. '76) is doing his B. Com in the same college. **Bobby Singh, Rajesh Senaai, H. Quareshi** are

doing History Honours in the same college. **Tara Sah** is doing Chemistry Hons. in St. Stephens. **Rakesh Chandra** is doing Economics Hons. in Hindu College. We got the following account of the Choudhury brothers. 1. **Jayanta Roy Choudhury**, a member of Scm till December 1965 is now an Associate



Jayanta Roy Choudhury

Member of the Institute of Chartered Accountants in England. He intends to stay behind in U.K. for a year or two to study Economics and allied subjects in greater depth before returning home to join the national efforts of developing the country **Sumanta Roy Choudhury**, the 2nd of the 3 Roy Choudhury brothers, also a member of Scm till 1969, now studies Economics at St. Xavier's College, Calcutta in the 3rd year and enjoys flying "Pushpak" air craft at the Behala Flying Club.



Sumanta Roy Choudhury

Up to the time of receiving this letter he had logged 44 hours. He is also a sergeant in the Air Wing Arm of the N.C.C. **Shushnata Roy Choudhury**, the youngest brother, is a member of Scm and at present studies in Class eight. **Anand Prasad Shrestha** was in St. Joseph's from 1960. He graduated from Lucknow University and took his Master's degree from Tribhuvan University in Nepal and since then he has been a lecturer in the English Dept. of the College. He now wants his two nephews and his son to be admitted to St. Joseph's. **L.M.Pande** very kindly sent me the following information....."True to the name of the Kumaon Hills, where all of us came to know & love Scm, it is indeed characteristic the number of us who stuck to the name even in

service, and got commissioned in the Kumaon Regiment. Here are some of the names I could gather. Maj. N.S. Negi (S.C. '32) Maj Yogesh Prasad Mathur (S.C. '36) Maj. Surendra Sah V, re, Maj. Das Gupta (S.C. '56) Capt. Sapru, Capt. A.P.Kala, Capt H.C. Sah, Capt. Gopal Tandon and, of course, yours truly Capt. L. M. Pande. Some of the other seniors serving in other Regiments are: Capt. R.S. Sirohi, Capt. Dalip Joshi, Capt. Ravi Kant, Capt. R. Singh, Capt. H.N. Tewari, Lt. B. S. Bartwal, Lt. R. Velu



Capt. L.M. Pande

As for myself I did my S.C. in '63 and then qualified for the N.D.A. Kharakvasla and was commissioned from the Indian Academy D'Dow in 1970, into the Kumaon Regiment.

Major D. Das Gupta writes "I am in the same unit as Lalit Pande and there are many old boys of Sem in the army. When I am on leave I keep bumping into several of the Old Boys, some of them being Gopal Rana, M. S. Kathiat, Robin Hazarika, S.C. Sahgal & M. Dugal. They are all doing well and have warm and affectionate memories of the old days when we were not a part of the sweat and struggle of this commercial world".

Capt. V.K. Joshi (S.C. '62) is now Staff Officer in the Corps H.Q. He has also met several old boys of Sem.

Capt. J.S. Dhillon (S. C. '66) called up to see us during the year when he was in Naini Tal on his honeymoon. After leaving Sem, he did his graduation from Jullunder and joined the army in '66. He was commissioned in '67 and was posted to various places. He took a very active part in the '71 war. During his time he has come across, **Sol. Batra** & some other old boys. Brig. N.S. Rawat very kindly gave me the following account.

"An Old Boy awarded A.V.S.M."

The Government of India was pleased to announce on 11th April 1972 the award of "Ati Vishisht Sewa Medal" to an old boy of St. Joseph's

College Naini Tal, **G. S. Rawat**, Brigadier, General Staff XVIII Corps, for outstanding distinguished services,



Brig. G.S. Rawat

especially during 1971 December War. G.S. comes from a family which has rendered conspicuous service to the army for over 150 years. His great grandfather and grandfather served in the 3rd Gurkhas as Junior Commissioned Officers and his Father, Brigadier N.S. Rawat, retired after thirty years of meritorious service. He was a student of St. Joseph's and was commissioned in the army in 1947. He has been holding important posts both in war and peace. His younger brother, **Commander M.S. Rawat, I.N.**, winner of the President's Gold Medal, was also a student of St. Joseph's as narrated in the 1970 College Review. So, St. Joseph's has surely excelled in inculcating real merit, worth and leadership among

its pupils." Vijay Kapoor has just finished his Master's in Business Administration in New Jersey. **Michael Perry** who is studying at Melbourne University has met a number of Old Sem Boys down under, among them he mentions **Ainsley Frost** who is studying Marine Engineering at the Royal Melbourne Institute of Technology. **David Menzies** is in Perth; **Frank Hytten** is in Queensland. **Rennie & Gilbert Doure** as well as **Dennis Fallon** are frequent visitors to the Perry's house. The two **Clements** are also in Melbourne. **Xerxes Tarapore** is in the Engineering College in Berhampur. **S.C. Bhandari** is doing his M.A. at Bareilly College. **Rex D'Souza** is doing his LL.B. from the same college, his brother **Joe** is a Captain in the army and was in active service in the Indo-Pak War. **S. Doctor** has now taken a training with M/s Siemens India Ltd. for six months and has joined his father's business. He intends getting married very soon. He is also negotiating with a German firm for further training. **Ranjit Kapoor (S.C. '67)** has finished his B. Com. and is now working in his father's firm. **S. Saxena** along with a number of last year's day-scholars are studying in D. S. B. College Naini Tal. (So far this is all the information we have of our past pupils for 1972)

Letters to the Editors

Bishop's House
Hazratganj, P.O. 70,
Lucknow, U.P. (India)
11th March 1972

Dear Rev. Brother,

I had quite a surprise when I received your college annual to find that you had dedicated the number to me ! Thank you very much for this gracious act. I really enjoyed going through the magazine and seeing the various activities your college engages in.

I was very much impressed to see the old boys corner and notice that personal and cordial relationship with old boys continue.

I don't need to emphasise how good an institution St. Joseph's College is. Your college annual shows its great traditions. With my good wishes and blessings for you and the staff and the students.

Yours devotedly in Christ,

Cecil deSa
Bishop of Lucknow.

27th March '72

Dear Sir,

We received the college Review and thank you very much for the same. We found it very interesting especially the history of the college and we wish St. Joseph's the very best of luck at all times.

Thanking you,

Yours faithfully,
(Mrs. M.S. Joddy)